ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

मार्गशीर्ष २०७८ दिसम्बर २०२१

₹ २०

कविता

चंदा मामा

– गीता गुप्ता 'मन'

चन्दा मामा चन्दा मामा,
रात में क्यों तुम आते हो।
दिन भर कहीं घूमते रहते,
धूप से या डर जाते हो।।
उजला–उजला रंग तुम्हारा,
कहीं न काला पड़ जाए।
दिन में छिपकर रहते हो क्या,
छाला कहीं न पड़ जाए।।
सूरज जैसे घर को जाता,
झट बाहर आ जाते हो।
अपने संग हजारों तारे,
आसमान बिखराते हो।।
मेरी सारी गर्मी हरते,
ठंडी हवा चलाते हो।
पानी से नहला कर इनको,
ठंडा–ठंडा बनाते हो।।
माँ कहती मामा हो सबके,
फिर भेंट नहीं क्यों लाते हो?
कभी–कभी पूरे दिखते हो,
कभी कहीं छिप जाते हो।।

– उन्नाव (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

मार्गशीर्ष २०७८ ▪ वर्ष ४२
दिसम्बर २०२१ ▪ अंक ६

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

दिसम्बर मास की ३ तारीख को है हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी का जन्मदिन। चूँकि उनका जन्मदिन **'विद्यार्थी दिवस'** के रूप में मनाया जाता है इसलिए विचार आया कि क्यों न आपसे थोड़ी चर्चा **विद्यार्थी** शब्द पर ही करूँ।

बचपन से ही हमें प्राय: दो शब्दों से परिचय हो जाता है एक **शिक्षा**, दूसरा **विद्या**। थोड़े बड़े हुए नहीं कि बच्चों को विद्यालय भेज दिया जाता है और कोई पूछे कि क्यों भेजा जा रहा है? तो उत्तर आता है शिक्षा प्राप्त करने। शिक्षा के साथ **शिक्षक** और **शिक्षार्थी** शब्द तो हैं पर **विद्या** के साथ बस **विद्यार्थी** शब्द। विद्यालय भी है पर विद्या देने वाले के लिए विद्या से बना कोई शब्द नहीं, वहाँ उसे **'गुरु'** कहा है।

पुस्तकों से पढ़ी या शिक्षक की बताई बातें शिक्षा है पर वह इतनी अच्छी समझ में आ जाए कि हम उसे कुशलता से कर भी सकें तो वह विद्या कही जा सकती है।

मजेदार बात यह है कि हमने कितना पढ़ा यह जीवन में उतना काम नहीं आता कितना सीखा यह काम आता है। हमारी गाड़ी को सुधारने वाला व्यक्ति मेकेनिकल इन्जीनियरिंग पढ़ा हुआ न होने पर भी हमारी गाड़ी ठीक कर देता है जो कभी-कभी पढ़े-लिखे व्यक्ति से भी संभव नहीं हो पाता। एक ने मोटरगाड़ी ठीक करने की शिक्षा पाई है दूसरे ने विद्या। शिक्षा केवल बुद्धि तक रहती है विद्या अनुभव तक पहुँचती है। विद्या का परिणाम शिक्षा के परिणाम से अधिक फलदायी है।

'गुरु गृह पढ़न गए रघुराई। अल्प काल विद्या सब पाई।।' जैसी सूक्तियाँ सिद्ध करती हैं कि राम व कृष्ण जैसे महान कर्मवीरों के गुरुकुलों में **'पढ़ाया'** ही नहीं **'सिखाया'** जाता था। इसीलिए वसिष्ठ और सांदीपनि 'गुरु' थे केवल शिक्षक नहीं।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की संरचना में भी यही संकल्पना है कि आप पुस्तकीय ज्ञान के साथ प्रायोगिक ज्ञान से भी सम्पन्न **'सफल विद्यार्थी'** बनें। स्मरण रहे शिक्षा दी जा सकती है विद्या प्राप्त करना होती है। आप सभी सही अर्थ में विद्यार्थी बन सकें यह शुभ कामना है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- दादाजी की वसीयत -पद्मा चौगाँवकर ०५
- नई आवाज -डॉ. के. रानी १२
- एक तालाब का घमंड -राजा चौरसिया २६
- आओ विद्यालय चलें -डॉ. रंजना जायसवाल ३४
- वह चोर मैं हूँ -ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' ४०
- भगवान बचाएँ -डॉ. शशि गोयल ४३
- काली गोरी चिनमिन -सुमन बाजपेयी ४६

एकांकी

- मैं गंगा हूँ -डॉ. मो. साजिद खान ०८

छोटी कहानी

- बिछुड़े हुए जूते -अनुरूपा चौधुले १८
- सफाई -डॉ. उमेशचन्द्र नैथानी २३
- विकलांग शेरू -डॉ. अशोक शर्मा ३०
- चश्मे वाली बिल्ली -बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' ४९

प्रसंग

- विद्यार्थी जी के आँसू -शिवकुमार गोयल २०

बाल प्रस्तुति

- विद्यार्थी -नंदिनी बोराटे ०७

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स २४
- चित्र बनाकर रंग भरो -चाँद मोहम्मद घोसी ३१

कविता

- चंदामामा -गीता गुप्ता 'मन' ०२
- तोते हो -महेन्द्र कुमार वर्मा ०७
- शून्य -गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' ११
- पट्टू तोते की आजादी -लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १६
- छः अंगुल मुस्कान १९
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २१
- सरल विज्ञान -संकेत गोस्वामी २५
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान २८
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २९
- विषय एक कल्पना अनेक: बस्ता
  - बस्ते में खजाना -डॉ. फहीम अहमद ३२
  - मेरा बस्ता -डॉ. हरीश निगम ३२
  - भारी बस्ता -बाल स्वरूप राही ३३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ३६
- आपकी पाती ३८
- शिशु गीत -नवीन सागर ४२
- पुस्तक परिचय ५०

चित्रकथा

- उस्ताद हल्लाचंद -देवांशु वत्स १५
- रास्ता -संकेत गोस्वामी २२
- हाजमे की गोलियाँ -देवांशु वत्स ३९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी

दादा जी की वसीयत

– पद्मा चौगांवकर

बस में बैठे गोपीनाथ का मन व्यथित और व्यग्र था ऐसा लग रहा था उसे कि बस बहुत धीमी गति से चल रही है। हमेशा गाँव आते हुए, बस की टूटी खिड़की से वह बाहर के दृश्य देखा करता। पर आज मन उचाट था। बस छोड़ वह तेज गति से गाँव की ओर दौड़ रहा था।

पता नहीं, दादा जी का स्वास्थ्य कैसा है! उसके पहुँचने से पहले, कहीं... नहीं, नहीं, कल्पना उसे असह्य थी। होस्टल में, कल रात, गाँव के एक लड़के ने, उसे समाचार दिया था– ''दादा जी बहुत बीमार हैं।''

लाचारी थी कि बरईगाँव के लिए दोपहर के बाद कोई बस नहीं थी। सुबह जल्दी वॉर्डन को सूचना देकर, वह बस स्टेण्ड पहुँच गया था।

जैसे–तैसे गाँव के बस अड्डे पर बस रुकी। गोपी लगभग दौड़ता हुआ घर पहुँचा। चाचा आँगन में बैठे थे, उदास। उन्हें देख गोपी ने पूछा– ''कैसे हैं दादा जी?''

उसकी आवाज सुनकर माँ निकलकर आई, बोली– ''जा, दादा जी तेरी ही राह देख रहे हैं, बार–बार पूछते हैं कल तो बहुत पीड़ा थी आज कुछ ठीक हैं।''

गोपी उनके कमरे में गया तो उसे देख वे धीमे से मुस्कराए। संकेत से बुलाकर पास बैठा लिया। गोपी सोच रहा था...

अभी कुछ पहले ही तो उन्हें अच्छा छोड़कर

गया था, कितने कमजोर हो गए–दादा जी!

उसकी चिंता के भाव जैसे उन्होंने पढ़ लिए, बोले– ''मेरी चिंता छोड़ बेटा! अब मेरे पास समय कम है। जा, कागज–कलम ले आ। मेरी वसीयत लिख ले। यही मेरी अंतिम इच्छा है।''

नौवीं कक्षा में पढ़ने वाला बच्चा गोपी–वसीयत का मतलब जानता तो था, पर उतनी अच्छी तरह नहीं।

पूछ बैठा– ''वसीयत? मैं?''..

''हाँ बेटा, मेरी अंतिम इच्छा, किसी कानूनी कागज पर नहीं, बस तेरी कलम से मेरी इच्छा, जो सबको पूरी करनी है।''

दादा जी की आवाज में कम्पन था, पर बात उन्होंने इस अंदाज से कही कि, उनका निश्चय जो भी हो, पक्का था।

घर में सब जानते थे, दादा जी ने जो कह दिया, कह दिया, उनकी बात होती, बस पत्थर की लकीर!

गोपी ने उठकर कॉपी–कलम निकाली और पास आकर बैठ गया।

''गोपी! पहले तो, मेरी, पूरी बात सुन ले... फिर लिखना।'' दादा जी धीरे–धीरे बोलने लगे, ''बहुत पुरानी बात है... इसी गाँव में मेरे दादा, ताऊ और बापू सब, दूसरों के खेतों पर मजदूरी करते थे। हमेशा महाजनों के कर्ज और उपकार तले दबे हुए। सारा दिन खटकर, जैसे–तैसे एक समय की रोटी जुटा पाते... हम सबको कई बार भूखे ही रहना पड़ता! हम बच्चों तक को काम में लगना होता। पढ़ने के लिए गाँव में विद्यालय नहीं थे– और समय भी कहाँ था?

ऐसे में एक दिन, महीनों से बीमार हमारे दादा जी की मृत्यु हो गई। कहते हुए दादा जी की आँखों में पानी उतर आया था। खाँसी का उबाल रुकने पर, उन्होंने फिर कहना शुरू किया–

''उनकी मृत्यु का शोम मनाने का भी समय नहीं था.. कि दूसरी ही समस्या खड़ी हो गई– मृत्यु भोज! उनकी मृत्यु पर गाँव–भोज नहीं दिया तो दादा को मुक्ति नहीं मिलना थी। सारे गाँव की यही मान्यता थी तेरई का भोज करने से मृतात्मा को तृप्ति मिलती है।

उसकी मृत्यु चाहे भूख से हुई हो, पर मृत्यु के बाद सबको भोजन अवश्य मिलना चाहिए।

अंध विश्वासों में जकड़ा था सारा गाँव– ताऊ और बापू भी तो! महाजन भी तो उदार हो गया, गाँव भोज के लिए पैसा उधार देने।''

घर का एक तो मर कर मुक्त हो गया... पर शेष परिवार भारी कर्जे में ऐसा डूबा कि फिर कभी उबरा नहीं।''

कुछ रुककर, फिर कहा– ''और मृत्यु हुई, जो बच गए महाजन के बंधुआ हो गए।'' गाँव के दूसरे परिवारों की तरह।'' गोपू यह सब कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा है– गाँव के भूखे–नंगे लोग, अनपढ़ गंवार लोग पर अंध परंपराओं और रूढ़िवाद में जकड़े लोग।''

''बड़ी मेहनत और पीड़ा के बाद हमने अच्छे दिन देखे, अब सब ठीक है। मेरी मृत्यु के बाद घर में सब यही चाहेंगे, मेरी स्मृति में धूम–धाम से मृत्यु भोज हो। उन्होंने विह्वल होकर कहा– ''गोपू! सबको बताना, मृत्युभोज के नाम से मेरी आत्मा काँपती है।''

गोपीनाथ सब सुनकर रो पड़ा वैसे उसने अपने परिवार के अतीत के बारे में सुन रखा था.. आज दादा जी का दर्द उसका दिल दहला गया।

दादा जी ने उसके हाथ पर अपना ठंडा हाथ रखा और सहलाते रहे। दादा जी परिवार के आधार स्तम्भ थे। सख्त थे पर बहुत दरिया दिल। उनके दयाभाव का पारावार नहीं था।

गोपू कुछ शांत हुआ तो उन्होंने कहा–

''तू लिख बेटा! मेरी अंतिम इच्छा.. मेरी वसीयत।'' गोपू ने कलम उठाई.. कागज पर आँसुओं

से भीगे अक्षर... शब्द बनकर उतरने लगे...

''मेरे मरने के बाद, गाँव में मृत्यु भोज न देकर, मेरे बच्चों! जितना हो सके, उन गरीबों की मदद करना, जो लाचार हैं, कर्ज में डूबे हैं– भूखे और अनपढ़ हैं, तो ही मेरी आत्मा को शांति मिलेगी... मृत्यु भोज से नहीं।''

पोते के अक्षरों में अंकित, उनकी इच्छा क्या आज्ञा ही थी जिसका पालन परिवार को करना ही था।

– गंजबासौदा (म. प्र.)

बाल लेखनी

विद्यार्थी

–नंदिनी बोराटे, इन्दौर

कौए जैसे ढीट प्रयास,
लक्ष्य प्राप्ति तक तजे न आस।
नींद सदा कुत्ते–सी कच्ची,
लगन रखे बगुले–सी सच्ची।
थोड़ा खाए, आलस त्याग,
कम खर्चा, ना सुख से राग।
विद्यार्थी के लक्षण जान,
विद्या पाये चतुर सुजान।

कविता

तोते हो

– महेन्द्र कुमार वर्मा

कभी न हँसते रोते हो,
तुम मिट्टी के तोते हो।

लाल रंग से रंगी हुई
चोंच तुम्हारी प्यारी है,
हरे रंग की पूँछ तुम्हारी
लगती सबसे न्यारी है।

नव रंगों में खोते हो,
तुम मिट्टी के तोते हो।

मीठे फल ना भाते हैं,
मिर्ची तुम्हें चिढ़ाते हैं,
पढ़ने लिखने से भैया,
मिट्ठू जी कतराते हैं।

सपने कभी ना बोते हो,
तुम मिट्टी के तोते हो।

तुम सोते ना जगते हो,
पर असली से लगते हो,
पिंजरा जब भी खुल जाता,
कभी नहीं तुम भगते हो।

रिश्ता नहीं संजोते हो,
तुम मिट्टी के तोते हो।

– भोपाल (म. प्र.)

मैं गंगा हूँ

– डॉ. मोहम्मद अरशद खान

(पर्दा खुलते ही मंच पर एक सुंदर–सी बालिका बैठी दिखाई देती है। उसने मलमल की सफेद साड़ी पहन रखी है। नेपथ्य में मंद स्वरों में गीत की ध्वनि आ रही है। गीत की ध्वनि पर बालिका अपना आँचल लहराकर नृत्य करती है। उसका आँचल बहती हुई नदी–सा लहरा रहा है–

भारत है नदियों का देश,
भारत है नदियों का देश...
शस्य श्यामला धरती पर हो,
ज्यों दुकूल का वेश
भारत है नदियों का देश...
झूम–झूम बलखाती गाती,
पर्वत से इठलाती आती,
झरनों से झरती है ऐसे,
ज्यों बिखरे हों केश।
भारत है नदियों का देश...
कल–कल बहती, छल–छल बहती,
तन–मन को पावन है करती
मन के सारे संतापों का,
हर लेती है क्लेश
भारत है नदियों का देश...

(गीत की ध्वनि मंद होते–होते समाप्त हो जाती है। एक क्षण के सन्नाटे के बाद।)

गंगा– मैं गंगा हूँ। हाँ, मैं गंगा हूँ। युगों–युगों से भारत की इस भूमि को पवित्र करती आ रही हूँ। गंगोत्री से निकलकर पर्वतों–घाटियों को लाँघते, मैदानों और चट्टानों को पार करते भारत की धरती को स्वर्ण समान खनकती फसलें प्रदान करती हूँ। मेरे तट पर सभ्यता जन्मी। ऋषि–मुनियों ने शास्त्र रचे। तपस्वियों ने तप किए। सच्चे मन से नहाने वाले हर संसारी के पापों–संतापों को मैंने धो दिया। मैं युगों–युगों से बहती आई और युगों–युगों तक...

(अचानक नेपथ्य से किसी भारी वाहन की आवाज आती है। लोगों का शोर सुनाई देता है। दो आदमी पॉलीथीन के कचरे की बड़ी–बड़ी बोरियाँ लिए हुए आते हैं।)

पहला आदमी– अपने शहर को साफ रखना हर जिम्मेदार शहरी का कर्त्तव्य होता है।

दूसरा आदमी– इसलिए हम अपने घरों का सारा कूड़ा, सारी गंदगी शहर से दूर इस नदी में बहा देते हैं।

(यह कहते हुए वे कचरे की बोरियाँ गंगा पर उलट देते हैं और चले जाते हैं। पॉलीथीन के कचरे में गंगा डूब जाती है। कुछ देर बाद वह किसी तरह कराहती हुई कचरे के ढेर से बाहर निकलती है।

उसकी बर्फ जैसी सफेद साड़ी अब मटमैली हो गई है। कचरा उसके बालों में उलझ गया है।)

गंगा– (सुबकते हुए) आह! लोगों के मन का मैल धोनेवाली गंगा आज स्वयं मैली हो रही है। जगह–जगह कचरों के ढ़ेर, गंदगी मेरे निर्मल जल को दूषित कर रहा है। जहाँ मेरे तट पर जंगलों की हरियाली झूमती थी, अब वहाँ पॉलीथीन से पटे कचरों के पहाड़ खड़े हैं। उनके बीच मैं सिकुड़ती–सिमटती जा रही हूँ। (थरथराते हुए) आह! मेरा शरीर व्याकुल हो रहा है। बदबू से जी मचल रहा है। मेरी काया क्षीण होती जा रही है।

(तभी नेपथ्य से पानी बहने की आवाज आती है। जैसे पानी की कोई मोटी धार बही चली आ रही हो। गंगा घबराई हुई इधर–उधर देखती है। तभी मंच पर काले कपड़े पहने और बहुत ही गंदा कंबल ओढ़े हुए एक व्यक्ति का प्रवेश करता है।)

व्यक्ति– मैं शहर की सारी गंदगी समेटकर बहने वाला नाला हूँ। मेरे अंदर कूड़ा–कचरा–मल भरे हुए हैं। मैं खेती–किसानी में प्रयोग होने वाले कीटनाशकों का प्रभाव भी समेटे हुए हूँ। मुझसे सब डरते हैं, इसीलिए सीवर लाइनों से मुझे शहर से बहार निकाल दिया जाता है। चलते–चलते थक गया हूँ। (अँगड़ाई लेता है) अब जाकर नदी में नहाऊँगा और फिर चैन की वंशी बजाऊँगा।

(गंगा घबराकर भागने का प्रयत्न करती है। पर काला कपड़ा पहने व्यक्ति उसके ऊपर अपना कंबल डालकर चलता बनता है। गंगा कंबल से बाहर आने का प्रयास करती है।)

गंगा– (सिसकते हुए) देखो, देखो,मेरा क्या हाल हो गया है। मेरी स्वच्छ–निर्मल काया कैसी मटमैली होती जा रही है। सदा मुस्कान बिखेरने वाला मुखड़ा कैसा मलिन होता जा रहा है। आह! कोई मुझे बचाओ। मेरा दम घुट रहा है। मेरी साँसें रुक रही हैं।

(तभी नेपथ्य से मशीनों की घर्र–घर्र सुनाई देती है। जैसे किसी कारखाने में काम चल रहा हो। गंगा घबराई हुई इधर–उधर देखती है। तभी मंच पर तेल और गंदगी से सना चोंगा पहने एक व्यक्ति प्रवेश करता है।)

व्यक्ति– हा.... हा... हा..., मैं कारखानों से निकला हुआ कचरा हूँ। आज मैं कारखाने से आजाद हुआ। मेरे भीतर आर्सेनिक, क्रोमियम और फ्लोराइड जैसे अत्यंत जहरीले रसायन घुले हुए हैं, जो पल भर में मनुष्यों को समाप्त करने के लिए काफी हैं। आज मुझे नदी के पानी में घुलकर स्वयं को स्वच्छ करने का अवसर मिला है। आज तो मैं खूब नहाऊँगा। जी भरकर नहाऊँगा। और हाँ, मुझे भुख भी बहुत लग रही है। आज नदी के जीव–जंतुओं की जमकर दावत उड़ाऊँगा। आज को मौज ही मौज है। हा... हा... हा...।

(वह व्यक्ति गंगा के ऊपर अपना तेल और

कालिख से सना गंदा चोंगा इस तरह फैला देता है कि गंगा पूरी तरह ढँक जाती है। वह बड़ी कठिनाई से हाँफते-खाँसते हुए चोगे के बाहर अपना मुँह निकालती है। धीरे-धीरे वह बाहर आ जाती है। उसका चेहरा पूरी तरह से काला हो चुका है। सफेद साड़ी गंदगी से सराबोर हो चुकी है।)

गंगा- आह! सारा शरीर जल रहा है। मेरा सिर चकरा रहा है। आह! यह सब ओर अँधेरा क्यों छाता जा रहा है? मेरी दृष्टि क्यों धुँधली होती जा रही हैं? प्यास से मेरा कंठ क्यों सूख रहा है? मुझे चक्कर क्यों आ रहे हैं? आह कोई मुझे बचाओ...

(गंगा चक्कर खाकर गिर पड़ती है। उसके शरीर की हलचल धीरे-धीरे शांत होने लगती है। मंच का प्रकाश मद्धिम हो जाता है। कुछ पलों के लिए सन्नाटा छाया रहता है। अचानक बच्चों की किलकारियाँ सुनाई देती हैं। ऐसा लगता है वे हँसते-बोलते निकट आ रहे हैं।)

एक बच्चा- अरे! गंगा को क्या हुआ?

दूसरा बच्चा- (लपककर उसका सिर गोद में रखता हुआ।) अरे! इसकी साँसें तो थम रही हैं।

तीसरा बच्चा- (अपने हाथ में पकड़ी किताब से हवा करता हुआ।) गंगा! गंगा! होश में आओ। क्या हुआ तुम्हें? तुम्हारी यह दशा किसने की?

गंगा- (कराहती हुई।) आह! मेरी यह दशा मेरे अपनों ने ही की है। मेरी काया सिमटती जा रही है। मैं दूषित होती जा रही हूँ। लगता है वह दिन अब दूर नहीं जब मैं केवल किताब के पन्नों में सिमटकर रह जाऊँगी।

दूसरा बच्चा- (उसके मुँह पर हाथ रखते हुए।) ऐसा मत कहो, गंगा!

पहला बच्चा- हाँ गंगा! हम तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे।

तीसरा बच्चा- हम लोगों को समझाएँगे। उन्हें रोकेंगे। हमारा विश्वास करो, हम तुम्हें यूँ ही मिटने नहीं देंगे।

गंगा- हाँ मेरे बच्चो! मुझे तुमसे पूरी आशा है। तुम आने वाले कल का भविष्य हो। तुम लोग मुझे अवश्य बचाओगे। अब तो मेरा भविष्य तुम्हारे प्रयत्नों पर ही निर्भर है। काश, तुम्हारी तरह सब विचार कर पाते।

सब बच्चे- (मुट्ठी बंद करके एक साथ करके अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए।) गंगा! हम सब शपथ लेते हैं कि हम बच्चे तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे। हम स्वयं भी नदियों को प्रदूषित होने से रोकेंगे और लोगों को जागरूक भी करेंगे।

गंगा- (आस भरी दृष्टि से देखते हुए।) प्रसन्न रहो मेरे बच्चो! मुझे तुमसे यही आशा है। (सभी पात्र जमा हो जाते हैं। मंच का प्रकाश धीरे-धीरे मंद पड़ने लगता है। नेपथ्य से गीत की आवाज आती है-

नदियों की कल-कल में जीवन बहता है,
जल जीवन की पहली आवश्यकता है।
जल से ही यह धरती शस्य-श्यामला है
सब है सुंदर-सुंदर सब भला-भला है।
नदी बची तो, प्राण बचेंगे, हम सबके
नदियों से ही धरती की बगिया महके
नदियाँ और तालाब बचाओ
जीवन को खुशहाल बनाओ।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

गंगा केवल एक नदी नहीं, भारतीय संस्कृति की अविरल प्रवाहित भाव धारा भी है।

आर्यभट्ट ने खोजा मुझको,
कुछ भी न होने का भाव।
गणित में व्यापक महिमा मेरी,
मुझे न धन या ऋण में चाव।।

यदि संख्या के पूर्व में बैठूँ,
तो संख्या को हो न गुमान।
संख्या के आगे बैठूँ तो,
उसका दस गुना बढ़ा दूँ मान।।

किसी अंक से जुड़कर–घटकर,
अविचल रहता अंक स्वरूप।
संख्या चाहे बड़ी हो कितनी,
मुझे गुणन से हो मम रूप।।

मुझको भाग करो संख्या से,
संख्या बनती मेरे समान।
मुझसे माग करो संख्या को,
तो अनन्त में मचे तूफान।।

शून्य नाम मेरा सब जाने,
मेरी आकृति होती गोल।
कहने को कुछ मूल्य न मेरा,
किन्तु गणित में हूँ अनमोल।।

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
लखनऊ (उ. प्र.)

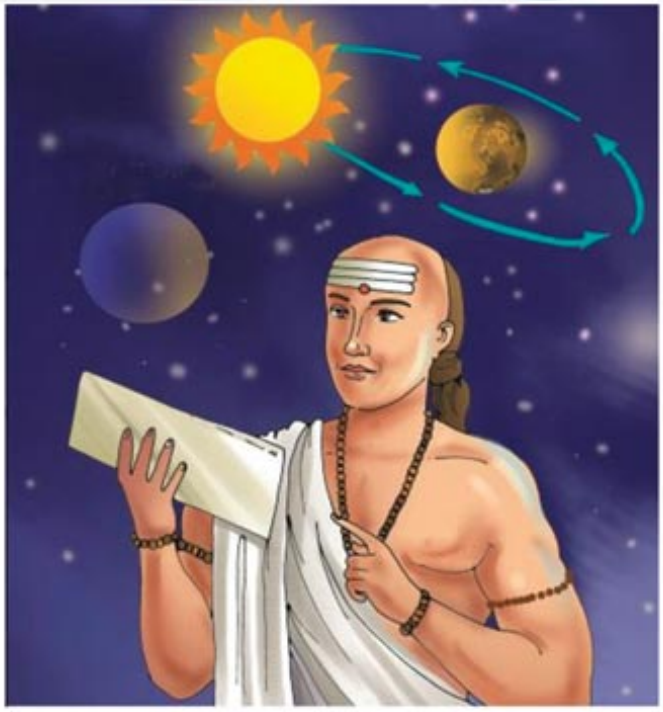

शून्य के आविष्कारक आचार्य आर्यभट्ट

गणित दिवस

आधुनिक भारत के महान गणितज्ञ श्री श्रीनिवास रामानुजन का जन्म २२ दिसम्बर १८८७ को हुआ था। कृतज्ञ राष्ट्र ने उनके १२५ वें जयंती समारोह २०१२ के अवसर पर २२ दिसम्बर को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाएं जाने की घोषणा की थी।

तब से यह दिन न केवल श्री रामानुजन के प्रति श्रद्धा प्रकट करता है अपितु भारत की श्रेष्ठतम प्राचीन गणित परम्परा का भी पुण्य स्मरण कराता है।

नई आवाज

– डॉ. के. रानी

ऋषभ विद्यालय से घर लौटा तो उसे वातावरण बहुत दु:खभरा लगा। प्रतिदिन इस समय दादा जी बाहर बरामदे में बैठकर समाचार–पत्र पढ़ते रहते। आज उनकी कुर्सी खाली थी। दादी एक किनारे चुप बैठी थी। ''दादा जी कहाँ है? वे कहीं घूमने गए हैं?'' ऋषभ ने पूछा तो दादी दुखी होकर बोली– ''तेरे नाना जी का स्वास्थ्य अचानक खराब हो गया। तुम्हारे दादा जी, पवन और उषा उन्हें देखने अस्पताल गए हैं।'' ''क्या हुआ नाना जी को?''

''तुम्हारे मामा बता रहे थे वे अचानक कुर्सी से लड़खड़ाकर नीचे गिर पड़े। वह तुरंत उन्हें लेकर अस्पताल चला गया। पता नहीं अचानक उन्हें क्या हो गया?''

नाना जी के स्वास्थ्य की सूचना पाकर ऋषभ का चेहरा उतर गया उसने जल्दी से हाथ–मुँह धोए और दादी के पास आकर बैठ गया। प्रतिदिन दादी उससे उसकी पढ़ाई, साथी और खेल के बारे में पूछती थी। आज वह सूनी आँखों से फोन की तरह टक लगाकर देख रही थी। उन्होंने ऋषभ से कोई बात नहीं की। वह समझ गया नाना जी के स्वास्थ्य को लेकर दादी भी बहुत चिंचित हैं।

''दादी! चिंता मत करो नाना जी शीघ्र ही ठीक हो जाएँगे।'' ऋषभ बोला तो दादी उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरने लगी। कुछ देर बाद ऋषभ की माँ का फोन आया।

''माँजी! पिता जी को हृदयाघात हुआ है। (हार्टअटेक) आप चिंता मत करना। डॉक्टर ने कहा है वे शीघ्र ही ठीक हो जाएँगे।'' यह सुनकर दादी के हाथ–पैर फूल गए। फोन पर वह माँ की बात सुन रहा था। उसे समझ नहीं आया कि हृदयाघात कैसे होता है? उसने दादी से पूछा– ''दादी! हृदयाघात कैसे होता है?''

''बड़ी आयु में शरीर के अंगों की काम करने की क्षमता कम हो जाती है उसी के कारण से हृदय कमजोर हो जाता है। वे तो स्वस्थ और तंदुरुस्त थे। तुम्हारे नाना जी को पता नहीं कैसे यह रोग लग गया।''

''नाना जी ठीक तो हो जाएँगे दादी?''

''पवन ने बताया वह जल्दी ठीक होकर घर आ जाएँगे।''

उसके दिमाग में दादी की कही बातें घूम रही थी। आज उसके नाना जी का स्वास्थ्य खराब था। पिछले सप्ताह उनसे मिलने गया था। तब वे एकदम स्वस्थ थे। उसके नानाजी का वजन अधिक था। वे अक्सर टी. वी देखते रहते। घर के सभी लोग उनकी खूब सेवा करते। उनकी एक आवाज पर सब कुछ उनके सामने आ जाता। नाना जी को खाने का बड़ा शौक था। जब वह उनसे मिलने जाता वे उन्हें खूब मिठाई, समोसे, फास्ट–फूड आदि खिलाते और स्वयं भी खाते। उसने नाना जी को अधिकांशत: बैठे ही देखा।

नाना जी के मुकाबले उसके दादा जी दुबले–

पतले और बड़े कड़क थे। इस आयु में दादा जी प्रतिदिन प्रातःकाल टहलने जाते, योगासन करते और संयमित खाना खाते। वे अपने अधिकांश काम स्वयं करते। दादा जी उसे हमेशा अच्छी जीवन शैली अपनाने की सलाह देते–

ऋषभ! दिन प्रतिदिन तुम्हारा वजन बढ़ता जा रहा है। यह अच्छी बात नहीं है।''

''दादा जी! मैं कहाँ मोटा हो रहा हूँ? मेरे मित्र मुझसे अधिक वजनी हैं।''

''जिस प्रकार से तुम्हारा वजन बढ़ रहा है उसे स्वास्थ्य नहीं बीमारी कहते हैं। मोटापा अपने आप में एक बीमारी है। इसके कारण आने वाले समय में कई बीमारियाँ हो सकती हैं। तुम फास्ट फूड खाना छोड़ दो। अच्छा पौष्टिक भोजन किया करो। इससे शरीर स्वस्थ और फुर्तीला रहता है।''

''दादा जी! मैं प्रतिदिन फास्ट फूड नहीं खाता। कभी–कभी मन करता है यह सब खाने का। मैं आपके साथ बैठकर दाल, चावल, सब्जी, रोटी सलाद आदि चाव से खाता हूँ।''

''तुमने खेलना–कूदना कम कर दिया है ऋषभ। खेलने से शारीरिक व्यायाम हो जाता है। इससे शरीर के सभी अंग स्वस्थ रहते हैं।'' दादा जी उसे समझाते।

रात हो गई थी। दादी ने उसे खाना खाने बुलाया। बिना दादा जी, व माता–पिता के उसे डाइनिंग टेबल पर खाना खाने का मन नहीं कर रहा था। दादी के बहुत कहने पर उसने जरा–सा खाना खा लिया। उसे नाना जी की चिंता हो रही थी। दादी ने उसे अपने बगल में सुला दिया। अभी थोड़ा समय बीता ही था कि तभी उसे धकधक की नई आवाज सुनाई दी। उसे लगा कोई सामने खड़ा होकर यह आवाज निकाल रहा है। हिम्मत करके ऋषभ ने पूछा– ''तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?''

''तुमने मुझे पहचाना नहीं? गौर से देखो मैं तुम्हारा हृदय हूँ।''

''मेरा हृदय?''

''हाँ तुम्हारा हृदय। मैं दिन–रात धड़कता हूँ इसी कारण से तुम आराम से अपने काम करते हो। यदि मैं धड़कना बंद कर दूँ तो तुम जीवित नहीं रह सकते।''

''यह सब बातें तुम मुझे क्यों बता रहे हो?''

''तुम अपने नाना जी की बीमारी से बहुत परेशान हो। उनका हृदय ठीक से काम नहीं कर रहा।''

''मेरे नाना जी एकदम स्वस्थ थे। अचानक उन्हें पता नहीं क्या हो गया?''

''वे बहुत कम शारीरिक श्रम करते थे। उनका खान–पान आयु के अनुसार से ठीक नहीं था। इससे उन्हें यह परेशानी हुई है। मनुष्य को अपना हृदय स्वस्थ रखना चाहिए। हृदय साथ छोड़ दे तो मनुष्य जीवित नहीं रह पाता।''

''तुम तो मेरा साथ नहीं छोड़ दोगे?''

''ऐसा क्यों पूछ रहे हो?''

''नाना जी की बीमारी की सूचना पाकर मुझे डर लगने लगा है।''

''तुम मुझे स्वस्थ रखोगे तो मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा। तुम अभी स्वस्थ हो।''

''मैं भला इसके लिए क्या कर सकता हूँ? कहते हैं बच्चों का हृदय हमेशा स्वस्थ होता है।''

''यह सब पुराने जमाने की बातें हैं। अब नए जमाने में बच्चों का हृदय भी बदल गया है।''

''यह क्या कह रहे हो?''

''मैं तुम्हें सही बात बता रहा हूँ आजकल बच्चे जिस तरह का खाना खाते हैं उससे मेरे ऊपर बहुत दबाव पड़ता है। मुझ पर फैट जम जाने से काम करने में बड़ी दिक्कत होती है।''

''तुम इतने सुन्दर हो। तुम पर गंदगी कैसे जम सकती है?''

''बच्चे! जंक फूड और तली भुनी चीजें खाते हैं और शारीरिक श्रम नहीं करते। इसके कारण मुझ पर फैट (चर्बी) जम जाती है और मेरे काम करने की क्षमता घट जाती है।''

''तुम्हीं बताओ मुझे क्या करना चाहिए?''

''अरे भाई! तुम्हें व्यायाम और कसरत करनी चाहिए। खेलकूद से तुम्हारा हृदय यानि मैं बिलकुल स्वस्थ रहूँगा।''

''यही बात दादा जी भी कहते हैं।''

''वे सही कहते हैं। इस आयु में वे कितने चुस्त हैं। तुम्हारे नाना जी की आयु उनसे कम है। शारीरिक क्रियाकलापों की कमी और खान-पान में ध्यान न देने के कारण आज उनकी यह स्थिति हो गई।''

''मेरे नाना जी को कुछ तो नहीं होगा?''

''भगवान करें वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएँ। तुम्हें भी अभी से मेरा ध्यान रखना चाहिए।''

''तुम ठीक कहते हो। दादा जी कहते हैं खूब भागदौड़ किया करो और शरीर स्वस्थ रखा करो।''

''दादा जी अपने अनुभव से यह बात बताते हैं। आजकल छोटे-छोटे बच्चे भी मोटापे के शिकार हो रहे हैं। जिसका असर सीधा मुझ पर पड़ता है।''

''तुम बार-बार यह कहकर मुझे क्यों डरा रहे हो?''

''मैं तुम्हें डरा नहीं रहा हूँ वास्तविकता दर्शा रहा हूँ। तुम लम्बे समय तक स्वस्थ रहना चाहते हो तो तुम्हें मेरा बहुत ध्यान रखना पड़ेगा।''

''मुझे क्या करना होगा?''

''शरीर को सक्रिय रखकर मुझे स्वस्थ रखा जा सकता है। ऐसा खाना नहीं खाना चाहिए जिससे मुझ पर चर्बी जम जाए। इसमें मैं ठीक से काम नहीं कर पाता हूँ।'' हृदय बोला।

लगातार धक-धक की आवाज ऋषभ को परेशान कर रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसका हृदय उससे कैसे बातें कर रहा है?

''मुझे नींद आ रही है। इस समय तुम जाओ यहाँ से। मैं तुमसे कल बात करूँगा।''

''लगता है तुम मेरी बातों से डर गए हो।'' इतना कहकर हृदय जोर से हँसने लगा। ऋषभ ने उसे भगाना चाहा तभी उसकी नींद टूट गई। उसने देखा उसका हाथ छाती पर पड़ा हुआ है तभी उसे हृदय की धड़कन इतनी तेजी से अनुभव हो रही थी। वह उठकर बैठ गया। बगल में उसकी दादी लेटी हुई थी। उन्हें चिंता के कारण नींद नहीं आ रही थी। उन्होंने पूछा-

''क्या हुआ ऋषभ! तुम कच्ची नींद में क्यों उठ गए?''

''नाना जी के कारण से मुझे ठीक से नींद नहीं आ रही थी।'' उसने सही बात दादी से छुपा दी।

''तुम्हारे पिता जी का फोन आया था। वे ठीक हैं तुम सो जाओ।'' दादी बोलीं। वह करवट बदलकर लेट गया। उसने विचार कर लिया था अब वह प्रतिदिन व्यायाम करेगा और भोजन में पौष्टिक आहार ही लेगा। इसके अलावा शाम का समय मोबाईल की बजाए साथियों के साथ खेलने में बिताएगा।

सुबह वह जल्दी उठ गया था। दादी ने पूछा- ''तुम्हारे लिए क्या बना दूँ ऋषभ?''

''दादी! जो आप खाओगी मैं भी वही खा लूँगा।'' उसकी बात सुनकर दादी चौंक गई। कल तक वह सुबह उठते ही लता को अपनी पसंद की चीजें बता देता था। आज वह एकदम बदले हुए सुर में बात कर रहा था। वास्तविकता से परे दादी ने विचार किया शायद वह उन्हें परेशान नहीं करना चाहता। वह प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगी।

ऋषभ ने दादी के साथ बड़े ही आनंद से दलिया खाया और फिर अपने काम में व्यस्त हो गया। उसने विचार कर लिया था कि अब वह अभी से अपने हृदय को एकदम तंदुरुस्त रखने का हर संभव प्रयास करेगा।

-देहरादून (उत्तराखण्ड)

उस्ताद हल्लाचंद

चित्रकथा : देवांशु वत्स

राम के संगीतकार पड़ोसी उस्ताद हल्लाचंद और शोर कुमार...

ठहाका सम्राट : काका हाथरसी

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

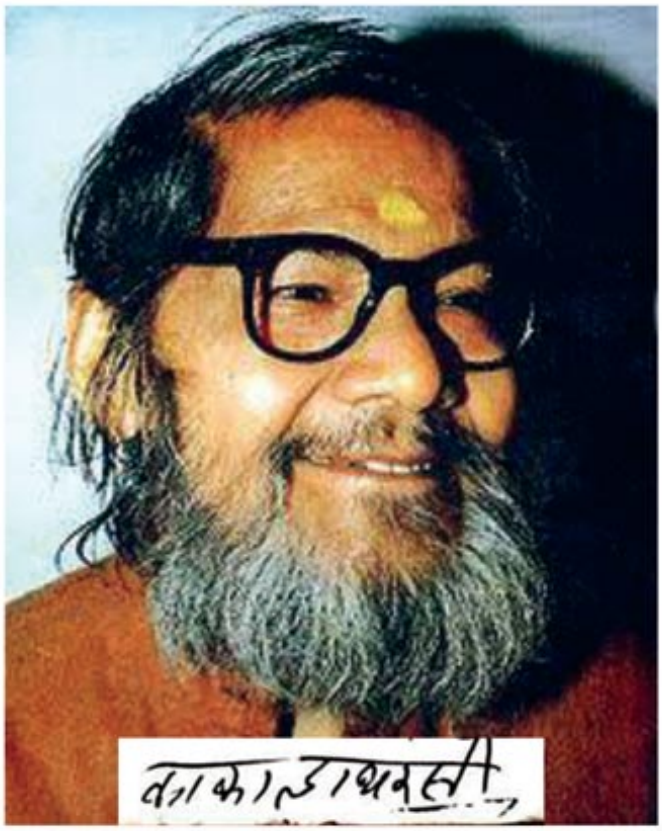

प्यारे बच्चो! जानते हो कि संसार में सबसे कठिन काम कौन सा है? यह है किसी को हँसाना। पद्मश्री काका हाथरसी ने आजीवन यही काम किया। कुंडली छंद में वे अपनी कविताओं से सबको हँसाते–गुदगुदाते रहे। सब उन्हें बड़ों का कवि समझते हैं लेकिन उन्होंने बच्चों के लिए भी अच्छी हास्य कुंडलियाँ लिखीं। पराग और नंदन जैसी पत्रिकाओं में उनकी बाल रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

उनका मूल नाम प्रभुनाथ गर्ग था लेकिन दुनिया उन्हें ठहाका सम्राट काका हाथरसी के नाम से जानती है। एक विचित्र संयोग यह भी कि उनके जन्म और निधन की तिथि एक ही है : १८ सितम्बर। १८ सितम्बर १९०६ को हाथरस में जन्में काका ने जब १८ सितम्बर १९९५ को दुनिया को अलविदा कहा, तब भी सबको खूब हँसाया। उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा था कि उनकी अंत्येष्टि के समय हास्य कवि सम्मेलन आयोजित किया जाए, ऐसा ही हुआ था। काका कहते थे हँसना सर्वोत्तम औषधि है। उन्होंने लिखा भी है– **जितना हँसता आदमी, उतना बढ़ता खून।**

उनके पिता का नाम शिवलाल गर्ग और माता का नाम बरफी देवी था। जब वे १५ दिन के थे, तभी उनके पिता का निधन हो गया था। काका कभी भी जीवन संघर्ष से विचिलित न हुए। उन्होंने कभी भी आत्मबल नहीं खोया।

वे बचपन से ही बड़े मेधावी थे। एक नाटक में उन्होंने 'काका' का अभिनय क्या किया कि उनका नाम ही काका पड़ गया। उनकी पहली रचना वर्ष १९३३ में 'गुलदस्ता' मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। वे अपनी अलमस्त रचनाओं के दम पर मंचों, रेडियो और पत्र–पत्रिकाओं में छाये रहे। उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

काका ने संगीत नाम से एक पत्रिका भी निकाली, जिसका बाल संगीत अंक तो आज भी मील का पत्थर कहा जाता है। बाल रचनाओं की लोकप्रियता और अमरता के लिए संगीत प्राण तत्व है। यह विशेषांक नि:संदेह बाल साहित्य और संगीत के अनन्य संबंध को परिभाषित करता है।

काका ने अनेक चर्चित कविताओं की पैरोडी भी लिखीं। आप कभी श्यामलाल गुप्त पार्षद के प्रसिद्ध झंडा गीत 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' की पैरोडी 'डंडा ऊँचा रहे हमारा' पढ़कर देखना। हँसते–हँसते पेट पकड़ लोगे। हम यहाँ पर आपके लिए काका हाथरसी जी की लिखी दो बाल कुंडलियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इन्हें पढ़ो और ठहाका लगाओ।

चुन्नू-मुन्नू की पिकनिक

थे पिकनिक के मूड में, चुन्नू-मुन्नू यार,
चले नहाने झील में, कुरते दिए उतार।
कुरते दिए उतार, दृश्य देखा यह आकर,
आँधी, दोनों कुरतों को ले गई उड़ाकर।
चुन्नू बोला, बच्चों को भगवान बचाते,
पहने होते कुरते, तो हम भी उड़ जाते।

ललुआ और हलुआ

मम्मी जी ने बनाए हलुआ-पूड़ी आज,
आ धमके घर अचानक, पंडित जी गजराज।
पंडित श्री गजराज, सजाई भोजन थाली,
तीन मिनट में तीन थालियाँ कर दीं खाली।
मारी एक डकार, भयंकर सुर था ऐसा,
हॉर्न दे रहा हो मोटर का ठेला जैसा।

मुन्ना मिमियाने लगा, पढ़ने को न जाऊँ,
मैं तो हलुआ खाऊँगा बस, और नहीं कुछ खाऊँ।
और नहीं कुछ खाऊँ, रो मत प्यारे ललुआ,
पूज्य गुरुजी खतम कर गए सारा हलुआ।
तुझे अकेला हम हरगिज न रोने देंगे,
चल चौके में, हम सब साथ-साथ रोएंगे।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

छोटी कहानी

बिछुड़े हुए जूते

– अनुरूपा चौघुले

एक दिन की बात है– एक माँ अपने बच्चे को गोद में लिए बाजार से सब्जी–भाजी और घर की छोटी–मोटी खरीददारी कर अपने कंधों पर सामान से भरे झोले लटकाए रास्ते से जा रही थी। थोड़ी दूर जाकर उसने एक रिक्क्षे वाले को रोका क्योंकि शाम का अंधेरा बढ़ने लगा था और निश्चित ही उसे घर पहुँचने की जल्दी रही होगी। घर जाकर पता पड़ा कि बच्चे के एक पैर का जूता रास्ते में ही कहीं गिर गया था।

माँ इतनी थक चुकी थी कि जूते की खोज में इतनी दूर जाना उसके लिए संभव नहीं था। किन्तु बच्चे के दूसरे पैर का जूता इस घटना से बहुत दुखी हो गया था। दोनों जूतों का दिनभर का साथ जो रहता था। दोनों आपस में बतियाते रहते थे लेकिन अब तो वे कुम्भ के मेले में बिछुड़े हुए भाइयों की तरह हो गए थे।

दूसरे जूते को स्वयं की मजबूरी पर बड़ा क्षोभ हुआ। स्वयं को कोसते हुए बोला– ''क्या लाभ मेरी इतनी लम्बी जुबान का जो न कभी कुछ बोल सके और न ही समय पड़े तो सहायता के लिए चिल्ला सके। लेकिन यही तो नियति है हम जूतों की। ये मनुष्य हमें पहनते समय हमारी जुबान खींचकर हमें फीतों से कसकर बांध देते हैं। हम भला कैसे चिल्लाएँ?''

दूसरा जूता बड़ा उदास होकर अपने बिछुड़े हुए साथी के साथ बिताए हुए दिनों को याद करने लगा था कि हम दोनों को जब दुकान से खरीदा गया था तब हमारे लाल चटकदार रंग के कारण हम दोनों कितने सुंदर दिखते थे। उस नन्हें बच्चे के पैरों में पहने हुए हम दोनों को हर आता–जाता व्यक्ति बड़ी प्रशंसा भरी दृष्टि से देखता था। खैर! अब वह सब याद करके क्या लाभ?

ज्यों–ज्यों अँधेरा बढ़ रहा था, उस दूसरे जूते को अपने साथी जूते को लेकर बड़े बुरे–बुरे विचार आने लगे थे। कहीं ऐसा तो नहीं कि कोई भारी भरकम वाहन उस जूते को रौंदता हुआ निकल जाए, या फिर रात को सड़क पर घूमते कुत्ते जूते को आपसी खींचा तानी में फाड़ ही डाले। या कहीं बड़े सबेरे सड़क सफाई के कर्मचारी आकर उस जूते को शहर भर के बदबू भरे कचरे की गाड़ी में न फेंक दें।

उस बेचारे का उस दुर्गंध से दम ही न घुट जाए। बेचारा मेरा भाई ना जाने किस हाल में होगा? तभी उस जूते को उस घर के बूढ़े दादा जी की आवाज सुनाई दी। वे शायद जूता ढूँढ़ने जाने की बात कहकर बाहर निकल गए थे। जब इस जूते ने यह सुना तो उसके हृदय में अपने बिछुड़े हुए साथी से मिलने की आशा जाग उठी थी।

वह हर आहट पर चौकन्ना होकर देखने लगता था। उसे दादा जी के लौट आने का बड़ी तीव्रता से प्रतीक्षा थी। थोड़ी देर बाद दादा जी लौटे तो सही किन्तु खाली हाथ। जूता बड़ा रुआँसा हो गया था।

आशा की अंतिम किरण बुझ चुकी थी। उसने

मन ही मन विचार किया अब भला उसे भी कौन पूछने वाला है ? कोई एक ही पैर में तो जूता नहीं पहनता! अपने बिछुड़े हुए भाई के बिना उसका भी क्या अस्तित्व रह जाएगा।

इस घटना को हुए पूरा सप्ताह बीत चुका था। माँ ने अपने बच्चे के लिए नए जूते खरीद लिए थे। अब उन नए जूतों के खूब नाज–नखरे उठाए जा रहे थे। उन्हें प्रतिदिन पोछा जाता था और उधर उस पुराने जूते पर धूल की परत जमती जा रही थी। जूते का सुर्ख लाल रंग मटमैला हो गया था। और एक दिन तो हद ही हो गई थी। पुराने जूते वाले को अटाले के आलतू–फालतू सामान के साथ वह जूता भी दे दिया था। कबाड़ी वाले ने सारा अटाला सामान ले जाकर अपने घर के आँगन में खाली किया क्योंकि उसे उनमें से वस्तुओं को अलग–अलग करना होता था।

वे सारी टूटी–फूटी वस्तुएँ अलग–अलग किमतों में बिकती हैं जैसे लोहे के टुकड़े, काँच की बोतलें, प्लॉस्टिक का सामान, कागज के डिब्बे, खोके या समाचार–पत्रों की रद्दी आदि।

सामान की छटाई करते समय कबाड़ी वाले के हाथ में जैसे ही जूता आया त्यों ही उसने अपनी पत्नी को आवाज देकर कहा– ''अरी मुन्ने की माँ! इधर तो देख! कुछ दिन पहले तुझे सड़क से एक जूता मिला था ना ? यह उस जोड़ी का दूसरा जूता है शायद।

कबाड़ी वाले की घरवाली दौड़कर अंदर से दूसरा जूता ले आई देखा तो दोनों जूते एक ही जोड़ी के थे। इधर दोनों जूतों ने एक–दूसरे को देखा तो दोनों की आँखों से खुशी के आँसू बड़ निकले थे। तभी कबाड़ी वाले की पत्नी ने दोनों जूतों को साबुन लगाकर धोया सुखाया दोनों जूते फिर चमकने लगे थे। लाल चटक रंग के जूते देखकर कबाड़ी वाले का बच्चा जूते पहनने के लिए मचल उठा था।

उसकी माँ ने तुरंत उसे जूते पहना दिए थे। बच्चा जूते पहनकर बड़ा किलक–किलक कर चलने लगा था। बच्चे को ऐसे ठुमक–ठुमक कर चलता देखकर उसके माँ–बाप भी हँस पड़े थे। दोनों जूतों को इतने दिनों के बाद एक दूसरे से फिर से ठीक–ठाक मिलने की खुशी तो थी ही लेकिन आश्चर्य भी कम नहीं था।

– इन्दौर (म. प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

माँ– जल्दी करो, तुम्हें विद्यालय के लिए देर हो जाएगी।

मुन्ना– इतनी जल्दी क्यों करती हो विद्यालय तो चार बजे तक खुला रहता है।

*****

शिक्षक– तुम्हें कैसे ज्ञात कि पंछियों की नजर तेज होती है।

छात्र– क्योंकि मैंने कभी उन्हें चश्मा लगाए नहीं देखा।

*****

शिक्षक– पहले हमें बिजली की चमक दिखाई देती है फिर उसकी कड़क सुनाई देती है। ऐसा क्यों ?

छात्र– क्योंकि हमारी आँखें हमारे कानों से आगे हैं।

*****

एक भूत ने दूसरे भूत से पूछा– आज मिठाई क्यों बांट रहे हो ?

दूसरे भूत ने कहा– आज मेरा मरण दिन है।

*****

रामू की शादी एक नर्स से हो गई।

सूरज रामू से– जिन्दगी कैसी बीत रही है ?

रामू– मत पूछ यार! जब तक कोरोना कोरोना न कहूँ, किसी भी बात का उत्तर नहीं देती।

प्रसंग

विद्यार्थी जी के आँसू

– शिवकुमार गोयल

(बलिदानी अशफाकउल्लाह खाँ)

वर्ष १९२७ की बात है। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाह खाँ, ठाकुर रोशनसिंह तथा राजेन्द्र लाहिड़ी को फाँसी की सजा सुनाई गई थी। लाला लाजपतराय तथा पं. मदनमोहन मालवीय ने वायसराय से भेंट कर फाँसी का दण्ड समाप्त करने का प्रयास किया किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। पत्रकार श्री गणेशशंकर विद्यार्थी इन राष्ट्रभक्तों की फाँसी का दण्ड समाप्त कराने के लिए भरसक प्रयास कर रहे थे। अशफाकउल्लाह खाँ विद्यार्थी जी के प्रति अगाध श्रद्धा–भावना रखते थे।

अशफाकउल्लाह खाँ के भाई रियासत–उल्लाह खाँ एक दिन श्री गणेशशंकर विद्यार्थी से मिलने पहुँचे। जैसे ही विद्यार्थी जी को पता लगा कि अशफाक के भाई मिलने आए हैं उन्होंने बीमार होते हुए भी तुरन्त उन्हें कमरे के अन्दर बुला लिया।

विद्यार्थी जी की आँखों से अश्रुधारा बह निकली तथा बोले–वकील कृपाशंकर हजेला से हम प्रिवी कौंसिल में फाँसी के विरुद्ध अपील करायेंगे। विद्यार्थी जी ने अपील के खर्चे के लिए १२ सौ रुपए भी भिजवाए। क्योंकि खर्चे के रुपयों की पूर्ति हो चुकी थी, इसीलिए रुपए वापस विद्यार्थी जी को भेज दिए गए। प्रिवी कौंसिल ने अपील स्वीकार ही नहीं की।

१९ दिसम्बर को फैजाबाद जेल में अशफाक को फाँसी दी गई। एक दिन पहले ही उन्होंने विद्यार्थी जी को तार द्वारा सूचना दी थी ''लखनऊ स्टेशन पर मेरे शव से आखिरी मुलाकात कर लेना।''

और जब फाँसी के बाद अशफाक का शव फैजाबाद से शाहजहाँपुर ले जाया गया तो गणेशशंकर विद्यार्थी ने लखनऊ स्टेशन पर ट्रेन के डिब्बे में पहुँचकर शव के चेहरे से चादर हटाकर अशफाक के अंतिम दर्शन कर अपने को कृतकृत्य किया। शहीद का चेहरा देखते ही वे रो पड़े थे।

– पिलखुआ (उ. प्र.)

बाल उपन्यास 'जंगल का रहस्य' का लोकार्पण संपन्न

'साहित्यांजलि तेरा तुझको अर्पण' कार्यक्रम के मंच पर ६ अक्टूबर २०२१ बुधवार के दिन सायं ६ बजे **नीलम राकेश** के बाल उपन्यास का लोकार्पण अध्यक्ष डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, मुख्य अतिथि डॉ. दिविक रमेश, श्री संजीव जायसवाल 'संजय', श्री राकेश चंद्रा एवं श्री अमिताभ मोहन के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के आरंभ में संचालक श्री अमिताभ मोहन ने प्रश्नों के माध्यम से लेखिका के साहित्यिक जीवन के आरंभ को उद्घाटित किया।

अतिथियों ने पुस्तक 'जंगल का रहस्य' पर सारगर्भित चर्चा की।

गोपाल मुखिया

– तपेश भौमिक

गोपाल एकबार गाँव का मुखिया बन गया था। उसे इसका खूब गुमान हुआ। वह चाहने लगा कि लोग उसे 'गोपाल' कहकर न पुकार कर 'मुखिया जी' कहकर पुकारा करें। इससे समाज में उसकी अच्छी साख बनेगी। उसके चाल–चलन में कुछ बदलाव आ गए थे।

एक सुबह गोपाल के घर के आगे कोई आकर 'गोपाल–गोपाल' चिल्लाने लगा। जब घर के भीतर से कोई से उत्तर नहीं मिला तो वह 'मुखिया जी–मुखिया जी' कहकर चिल्लाने लगा। गोपाल नींद से जाग चुका था लेकिन पड़ा–पड़ा मुस्कुरा रहा था। अब उसकी पत्नी ने आकर गोपाल से कहा कि वह बाहर निकल कर क्यों नहीं मिल लेता उस आदमी से? इस पर उसने मुस्कुरा कर जवाब दिया– ''तुम भी क्या गजब की बात करती हो। 'मुखिया जी–मुखिया जी' कहकर चिल्ला रहा है, इसमें मुझे बड़ा आनंद आ रहा है, उसके चिल्लाने से मेरा 'मुखिया जी' पद–नाम का प्रचार जो हो रहा है। मुफ्त में वह मेरा प्रचार कर रहा हैं, मैं तो 'गोपाल भाँड़' नाम से उकता चुका हूँ।''

माई–बाप

महाराज कृष्णचंद्र गोपाल से प्रगाढ़ स्नेह संबंध रखते थे। यहाँ तक कि अगर कोई उसके बारे में कोई भी शिकायत करता तो उसकी अच्छी खबर लेते थे। लेकिन कहते हैं न कि ''जो जिससे अधिक प्यार करता हो उसका उससे झगड़ा भी उतने ही अधिक हो जाता है।'' यही बात महाराज कृष्णचंद्र और गोपाल के बीच भी थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि किसी बात पर महाराज गोपाल से काफी नाराज हो गए थे। उन्होंने क्रोध में आकर गोपाल को कह दिया ''सुअर के बच्चे! तू अपने आपको क्या समझता है?'' इस पर गोपाल के चेहरे पर जरा–सी शिकन भी नहीं आई। उलटे वह हँसने लगा। उसे हँसता देख महाराज को और अधिक गुस्सा आ गया। वे गुस्से से पैर फटकने लगे। गोपाल ने महाराज को कहा– ''श्रीमान्! आप ही मेरे माई–बाप हैं, आपको अपनी संतान को गाली देने की पूरी छूट है।

– कूचबिहार (प. बंगाल)

प्रसन्नता ईश्वर का वरदान है

रास्ता

चित्रकथा-

..क्या बात है बच्चे, यहां अकेले खड़े क्यों रो रहे हो?

क्या हुआ तुम्हारी भैंस को?

आं.. ऊं मेरी.. भैंस आं..ऊं.आं..

..वह अकेली घर लौट गई है..

तो इसमें रोने की क्या बात है?

..हम दोनों में घर का रास्ता वही जानती थी..

सफाई

– डॉ. उमेशचन्द्र नैथानी

टेका जंगल के विद्यालय के प्रधानाचार्य ने 'शाला दिवस' पर जंगल के राजा शेरसिंह को मुख्य अतिथि बनने का न्योता दिया। प्रधानाचार्य सूर्या घोड़े ने जंगल के सभी पशु–पक्षियों और जीव–जन्तुओं को भी इस अवसर पर सपरिवार आमन्त्रित किया ताकि वे सभी अपने बच्चों की प्रगति देख लें और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी झलक देख लें।

शाला दिवस पर राजा शेरसिंह ठीक समय पर आ गए थे किन्तु काफी समय बीत जाने पर भी बच्चों एवं अभिभावकों की उपस्थिति नगण्य थी। कार्यक्रम में विलम्ब हो रहा था। राजा शेरसिंह ने क्रोध में प्रधानाचार्य सूर्या घोड़े से बोला– ''यह क्या मजाक है? तुमने जंगल के पशु–पक्षियों को क्यों नहीं बुलाया?''

सूर्या घोड़ा बोला– ''महाराज मेरे द्वारा प्रत्येक घर तक समय पर खबर कर दी गई थी। ऐसा क्यों हुआ मुझे पता नहीं है।'' शेरसिंह– ''जल्दी पता करो, यह राजा का अपमान है। मैं तुम्हें दण्ड दूँगा।''

सूर्या– ''महाराज! क्षमा कीजिएगा। मैं अभी तुरन्त जंगल में चम्पू भालू को भेजकर पता करवाता हूँ। थोड़ी ही देर में चम्पू भालू हाँफते हुए राजा शेरसिंह के पास आया। पैरों में सिर रखकर बोला– ''महाराज! जंगल के अधिकांश परिवार सर्दी, जुकाम, बुखार, बदन दर्द, सिर दर्द, उल्टी, पेचिस आदि से लेकर पीड़ित हैं।''

महाराज– ''यह तुम क्या कह रहे हो?''

चम्पू– ''हाँ महाराज! इनमें बच्चे–बूढ़े सभी उपस्थित हैं। अस्पताल में पैर रखने की जगह नहीं है। डॉक्टर और उनके सहायक दल रात–दिन काम कर रहे हैं।''

राजा शेर सिंह ने सूर्या घोड़े को शाला बंद करवाने के बाद अपने साथ जंगल में परिवारों से और अस्पताल में भर्ती मरीजों को देखने के लिए कहा।

आगे–आगे राजा चल रहे थे और पीछे–पीछे प्रधानाचार्य सबसे पहले ढ़ेंचू गधे के घर गए। ढ़ेंचू का पूरा परिवार उल्टी–दस्त से पीड़ित मिला। राजा ने

देखा घर के चारों ओर गंदगी का साम्राज्य फैला था। कूड़े के ढेर लगे थे। राजा ने पूरे परिवार को अस्पताल भिजवाने का आदेश दिया। फिर राजा और सूर्या घोड़ा चतुरा लोमड़ी के घर गए। घर में सभी जुकाम-बुखार से पीड़ित थे। राजा की नजर घर के कूलर पर पड़ी जिसके गन्दे पानी में मच्छर घूम रहे थे। चतुरा को तुरन्त सपरिवार अस्पताल भेजा गया।

फिर राजा और सूर्या जुगल जेब्रा के घर गए। परिवार में सभी सदस्यों के शरीर पर दाने निकले थे। खुजली करते-करते सभी के शरीर पर घाव हो गए थे। फोड़े-फुँसी ऊपर से अलग थे। राजा ने तुरन्त उन्हें भी अस्पताल भिजवाया।

राजा ने सारे जंगल में सूचना फैलाई कि कोई भी परिवार बीमार सदस्य को घर में न रखें। किसी भी तरह झाड़-फूँक का सहारा न लें। तुरन्त डॉक्टर को दिखाएँ। हम दूसरे जंगल से भी डॉक्टरों का समूह बुला रहे हैं।

राजा को समझते देर नहीं लगी। सारी बीमारियों की जड़ गंदगी थी। किसी ने भी गन्दे पानी की सही निकासी नहीं की थी। कूड़े के लिए न तो कोई व्यवस्था थी और ना ही घरों में ठीक से स्वच्छता थी। लोग शौच करने खुले में जा रहे थे। किसी के भी घर में शौचालय नहीं था। जंगल की पानी की टंकी की कई वर्षों से सफाई नहीं हुई थी। घरों के चारों ओर पानी रुका हुआ था।

कुछ समय बाद सभी पशु-पक्षी सपरिवार अस्पताल से घर लौट गए थे। राजा ने एक आम सभा का दिन रखा। सभा में राजा बोले- ''मेरी प्रजा के सभी प्राणियों आप सभी को सपरिवार स्वस्थ देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। ईश्वर का धन्यवाद! किन्तु कभी आपने यह भी विचार किया है कि आप में से अधिकांश लोग बीमार गंदगी के कारण पड़े हैं। अपने घरों के आस-पास साफ-सफाई रखें। गन्दा पानी बिल्कुल न रुकने दें। मक्खी-मच्छरों को फैलने से रोकें। प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण आज से ही करना प्रारंभ कर दें।

मैं राजकोष से इसके लिए अनुदान दूँगा। जंगल की पानी की टंकी की सफाई मिल-जुलकर प्रत्येक छः माह में करें। मैं एक दिन शहर गया था, वहाँ एक शाला में लिखा था- ''सफाई से मानव मानव है। सफाई जो न सीखे वह दानव है।''

- चुक्खूवाला (उत्तराखण्ड)

बढ़ता क्रम 03

संकेतः- - देवांशु वत्स

1. पृथ्वी, जल, माता।
2. चौपड़ का मोहरा।
3. प्रेमचंद का एक महान उपन्यास।
4. छिपाने योग्य।
5. अस्पष्ट अर्थ वाला।
6. मूर्ख, निपट अनाड़ी।

1.	गो					
2.	गो					
3.	गो					
4.	गो					
5.	गो					
6.	गो					

उत्तर: 1. गो, 2. गोटी, 3. गोदान, 4. गोपनीय, 5. गोल मटोल, 6. गोबर गणेश।

सरल विज्ञान

प्रस्तुति- संकेत

जब तुम कोई गेंद पकड़ते हो तो गति में आती गेंद के बारे में तुम्हारा दिमाग तुरंत अनुमान लगा लेता है. तुम्हारे हाथ तेजी से उस बिंदु तक पहुंचते हैं, जहां गेंद आनी है.

ऐसी एक हरकत करने के लिए तुम्हारा नाड़ी तंत्र समय लेता है. आकार, दूरी के बारे में अनुमान का और फिर प्रतिक्रिया करता है.

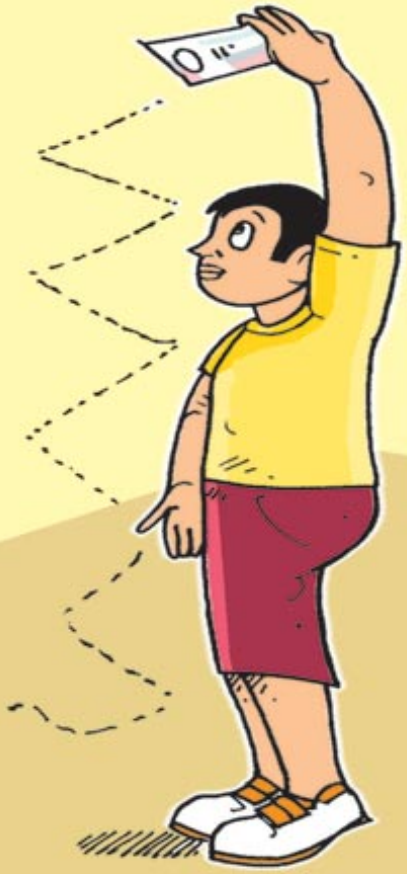

इस प्रतिक्रिया को समझने और इसमें गड़बड़ करने के लिए एक नोट लो या कागज का कोई छोटा टुकड़ा. उसे ऊंचाई से गिराओ ताकि लहराता हुआ गिरे.

अब कोशिश करो इसे एक हाथ से पकड़ने की. क्या गेंद पकड़ने के मुकाबले ये आसान है?

मुश्किल है क्योंकि कागज तेजी से आती गेंद के मुकाबले बहुत धीरे और दिशाहीन होता है और तुम्हारा नाड़ी तंत्र इस पर एकदम प्रतिक्रिया नहीं कर पाता. कई बार सरल दिखने वाला काम करने में ज्यादा मुश्किल होता है.

एक तालाब का घमंड

– राजा चौरसिया

किसी गाँव में एक तालाब था। वह आसपास की सभी तलैयों के सामने इकलौता बड़ा तालाब था। अत: उसका अपने–आप में इतराना स्वाभाविक था।

जब एक वर्ष बरसात में बादलों के बार–बार फटने से धुँआधार पानी बरसा तो वह पानी से मुँह तक लबालब भर गया। उसमें घमंड का भाव खूब फैलने–पसरने लगा।

''देखो! मैं समुद्र जैसा दिख रहा हूँ।'' इस प्रकार अहंकार के चलते वह अपनी मर्यादा तोड़ लहरों को दूर–दूर तक उछाल रहा था। छोटे–पेड़–पौधों को दिन–रात झकझोरता रहता था।

वहाँ पास के ऊँचे टीले पर बरगद का एक बहुत ही पुराना सयाना छतनार झाड़ था। वह चुपचाप उस बड़े तालाब की घमंडी हरकतों को निहारता रहता था।

एक दिन तालाब गंभीर बरगद से अपनी शान बघारते हुए ताल ठोंककर बोल पड़ा– ''क्यों जी! तुम मुझे अधिकांश गिद्ध–दृष्टि से देखते रहते हो, लेकिन जरा भी मेरी प्रशंसा नहीं करते हो! क्या तुम्हें पता नहीं है कि मेरी ताकत से लोहा लेने वाला कोई माई का लाल, ताल इस क्षेत्र में नहीं है।''

यह सुनकर बरगद के कुछ न बोलने पर तालाब फिर गरजा– ''मैं अपने पानी के दम पर बड़ी–बड़ी नावों को भी डूबा चुका हूँ। कोई भी मेरे पानी का सानी नहीं है। कई तैरने वाले डूबकर ऊपर चले गए हैं। सारे मवेशी मुझे पास से देखकर काँपने तथा हाँफने लगते हैं।''

''यदि तुम वास्तव में बड़े शक्तिशाली होकर बड़ी नावों और लोगों तक को डुबा चुके हो तो एक काम तुम अभी करके दिखाओ।''

''अच्छे काम में देर किस बात की! तुम जो काम चट से बताओगे वह मैं पट से कर दूँगा।''

''तुम्हारे पानी की छाती पर वह घास का तिनका तैर रहा है। उसे अभी डुबाकर बताओ तब मैं जानूँ कि तुम वाकई में महा बलवान हो, समझे?'' वृद्ध बरगद ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा।

''अरे! मैं जितना तेजपुंज हूँ, उतना ही लुंजपुंज यह बहुत दुबला-पतला, दीन और हीन तिनका है। समुद्र के सामने इस छोटे से तिनके की भला क्या बिसात? मैं तो भारी से भारी चट्टानों को भी अपने भीतर डुबाए हूँ।''

बस इतना कहकर तथा जोश में आकर वह तालाब अपनी ऊँची तेज लहरों से तिनके को डुबाने में जुट गया। घोर गर्जन-तर्जन का शोर सर्वत्र गूँज रहा था। थपेड़ों की थोक भाव से हर मार वह हल्का-फुल्का, बेसहारा और बेचारा तिनका झेलकर भी डूबने का नाम तक नहीं ले रहा था। केवल इधर से उधर पानी के ऊपर उछलता हुआ तैरता रहा।

युद्ध-स्तर पर किए गए प्रयास फुस्स होने की कगार पर पहुँचने के कारण तालाब अपने को बुरी तरह निराश एवं हताश होकर शांत होने लगा क्योंकि शान का बाजा फट गया था।

वहाँ का लगातार तमाशे जैसा दृश्य देखकर बूढ़ा बरगद यह भाँप गया कि तालाब का घमंड अब खंड-खंड हो चुका है। मीठे कटाक्ष का बढ़िया अवसर हाथ लगते ही वह बोला-

''अरे विशाल ताल जी! तुम जी जान से भिड़े दिखाई दिए परन्तु उस छोटे से बारीक तिनकों को अभी तक क्या डुबा पाए? तिनका तो ज्यों का त्यों तैरता हुआ अठखेलियाँ कर रहा है। तुम पस्त हुए और वह जीत गया। क्या यह सच है?''

''कोई माने या ना माने, घायल की गति घायल ही जाने।'' अपनी हार की झेंप मिटाने की गरज से तालाब कहने लगा- ''मैं तो असल में उस तिनके से यूँ ही खिलवाड़ कर रहा था। यदि इस घास के तिनको को डुबोता तो मेरी प्रतिष्ठा में धब्बा लग जाता। क्या चींटी पर हाथी को अपना पराक्रम दिखाना शोभा देता है?''

बूढ़े बरगद की यह सोच सही निकली कि पहाड़ के नीचे आने पर ही ऊँट को अपनी ऊँचाई की वास्तविकता का बोध होता है। तेल की नन्ही बूँद को इतना भारी पानी भी नहीं डूबा पाता है। किसी को तुच्छ समझने की मूढ़मति से अभिमान की दुर्गति सुनिश्चित है। दूसरों का पानी उतारने के प्रयत्न में स्वयं का पानी उतर जाता है।

थोड़ी देर बाद इतराता हुआ वह तिनका बरगद की ओर किनारे आकर धीमे स्वर में आभार जताते हुए बोला- ''दादा जी! आपको घमंडी तालाब की अकल को ठिकाने लगाने तथा मेरा साहस बढ़ाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!''

- उमरियापान (म. प्र.)

फ्लाइट लेफ्टीनेंट सुहास बिस्वास

वे जितने अच्छे लड़ाके थे उतने ही अच्छे उड़ाके भी। जब आप अपने विमान के साथ आकाश की अनंत और निराधार गहराइयों में होते हैं तब आप अपने विमान के नियंता ही नहीं होते आप उस विमान में बैठे सभी लोगों के प्राणाधार भी हो जाते हैं। सामान्य परिस्थितियों में हवाई यात्रा एक सुखद अनुभव है पर स्थिति बिगड़ते ही आप स्वयं को स्वर्ग के मार्ग के अधिक निकट अनुभव करते हैं ऐसे में परमात्मा और पायलट के भरोसे ही आपका सब कुछ दाँव पर लगा होता है। फिर चाहे आप कितने भी बड़े आदमी हो या सामान्यजन। यह घटना भी कुछ ऐसे ही रोमांच से भरी है।

९ सितम्बर १९२४ को कोलकाता में जन्मे फ्लाइट लेफ्टीनेंट सुहास बिस्वास ३ फरवरी १९५२ को कुछ वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को लेकर अपने डी हैवीलैण्ड विमान से दिल्ली से लखनऊ जा रहे थे। इन सेना के अधिकारियों में मध्य पश्चिमी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ एस. एन श्री नागेश, क्वार्टर मास्टर जनरल मेजर जनरल के. एम. थिमैया, चीफ आफ जनरल स्टाफ मेजर जनरल एस. पी. पी. थारोट और सैन्य सचिव मेजर जनरल शारदानंद यात्रा कर रहे थे।

विमान उड़ने के थोड़े ही समय बाद इंजन में तकनीकि खराबी आ गई और वह जलने लगा। विमान तुरंत न उतारने का अर्थ था हवा में ही सबके परखच्चे उड़ जाना। सैंडिला रेल्वे स्टेशन के पास एक छोटा मैदान दिखा। विपरीत परिस्थितियों में ही धैर्य व साहस की सच्ची परीक्षा होती है। फ्लाईंग ले. सुहास ने देखा लगभग १८२० मी. ऊपर से ही पोर्ट इंजन गिर गया है विमान डोल रहा है उन्होंने दूसरा इंजन चालू कर कुशलता से विमान उतार दिया।

सभी अधिकारी सुरक्षित रहे। फ्लाईट लेफ्टीनेंट सुहास बिस्वास को **'अशोक चक्र'** से सम्मानित किया गया। वे वर्षों वायुसेना की सेवा करते रहे। वायुसेना के वे **प्रथम अशोकचक्र विजेता** थे। दुर्भाग्य यह कि वे डकोटा विमान दुर्घटना नीलगिरि की पहाड़ियों में हमसे सदा के लिए खो गए।

प्रणाम है ऐसे धैर्य, साहस सूझबूझ के धनी गगन वीर को।

सशस्त्र सेना झण्डा दिवस : ७ दिसम्बर

हमारी सेना हमारा गर्व

सशस्त्र सेना झंडा दिवस

केन्द्रीय सैनिक बोर्ड

7 दिसम्बर – 7 DECEMBER
ARMED FORCES FLAG DAY

मान तिरंगे का रखने, हिमशिखरों तक चढ़ जाते हैं।
जलती रेगीस्तानी धरती, पर भी बढ़ते जाते हैं।।
नभ की नीली गहराई में, हैं जब विमान उड़ते अपने।
चूर-चूर हो जाते हैं तब, दुश्मन के सारे सपने।।
सागर की तूफानी लहरें, उन्हें डरा ना पाती हैं।
भारत की सशस्त्र सेना जब, वन्देमातरम् गाती है।।

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

छोटी कहानी : विकलांग दिवस ३ दिसम्बर

विकलांग शेरू

– डॉ. अशोक शर्मा

जंगल के उच्च माध्यमिक विद्यालय में आज वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम था। चारों ओर यह सूचना दी गई थी कि सभी विद्यालय के छात्र अपने–अपने माता–पिता के साथ आएँ। मदन शेर इस विद्यालय के संरक्षक थे इसलिए शाला प्रशासन की ओर से आज के उत्सव के मुख्य अतिथि मदन शेर को बनाया गया था। सारी तैयारियाँ शुरू कर अंतिम व्यवस्था पर ध्यान रखने का दायित्व नवल गजानन को दिया गया था।

जंगल में सभी जानवर अपने–अपने बच्चों के लिए चिंतित थे कि आज के शाला के परिणाम घोषित होने पर सबसे अधिक अंक लाने वाले बच्चे को पुरस्कृत किया जाएगा। इस कारण शाला के आचार्य नन्दलाल भालू के द्वारा एक सूचना जारी कर दी गई कि सभी बच्चे अपने अपने अभिभावकों के साथ ही उत्सव में आएंगे। नहीं आने पर उनका परिणाम–पत्र नहीं जारी किया जाएगा।

जंगल में सभी जगह उत्सव का वातावरण था। रणवीर सियार, भोलू चिंपाजी, बबन बन्दर, नीना हिरणी, शेखर जिराफ, पवन खरगोश, विकलांग शेरू, अजय भालू और शुभम् लोमड़ी एक उत्साह भरे वातावरण में शाला के उत्सव में जाने की तैयारी में लगे हुए थे। सभी तो प्रसन्न थे परन्तु विकलांग शेरू बहुत दुखी था कि अब वह इस वर्ष शाला के उत्सव में नृत्य नहीं कर पाएगा।

इसी वर्ष जंगल में बिजली के गिरने से शेरू का एक पैर जख्मी हो गया था एवं गगन चीता के उपचार से भी ठीक नहीं हो पाया था। आज विकलांग शेरू बहुत दुखी था कि वह अपने शाला के उत्सव में नृत्य नहीं कर पाएगा। शेरू की माँ भी काफी दुखी थी परन्तु शेरू की जिद के कारण वह उत्सव में सम्मिलित होने के लिए तैयार हो गई थी।

सभी बच्चे अपने–अपने अभिभावकों के साथ शाला आ रहे थे। थोड़ी देर में ही मुख्य अतिथि मदन शेर भी अपनी पत्नी श्रद्धा शेरनी के साथ पहुँचे। नवल गजानन की व्यवस्था देख सभी प्रसन्न थे। मुख्य अतिथि की कुर्सी पर बैठने के बाद ही नवल गजानन को पास बुलाकर उन्हें प्रबंध के लिए बधाई दे दी।

उत्सव शाला गीत से प्रारंभ हुआ। सभी बच्चों के मीठे गीतों से कार्यक्रम में रौनक आ गई। सभी अपने–अपने करतब दिखलाने में व्यस्त थे और शाला के आचार्य नन्दलाल भालू सबको सूची के अनुरूप अपने–अपने पराक्रम दिखलाने के लिए बुला रहे थे। हर प्रतियोगी के कार्यक्रम समाप्त होने पर खूब तालियाँ बजती थीं।

मदन शेर भी काफी प्रसन्न थे। तभी मदन शेर ने प्राचार्य नन्दलाल भालू को बुलाया और शेरू के कार्यक्रम के बारे में पूछा– ''कहाँ है प्राचार्य महोदय! अपना हीरो शेरू?'' यह सुनकर प्राचार्य ने सिर झुका कर शेरू के घायल होने के उपरान्त विकलांग होने की बात बतलाई। यह सुनकर मदन शेर बहुत ही दुखी हुए।

सारे कार्यक्रम की समाप्ति के बाद पुरस्कार वितरण समारोह में एक–एक करके सभी विजेता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बुलाया गया।

प्राचार्य की उपस्थिति में मदन शेर ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। उपहार व सम्मान पत्र के साथ मदन शेर ने सभी को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

तभी पुरस्कार वितरण के बाद मदन शेर ने प्राचार्य को बुलाकर शेरू को अपने अभिभावक के साथ मंच पर लाने का आदेश दिया। मदन शेर यहाँ यह समझ ही नहीं पा रहे थे कि आखिर क्यों? वास्तविकता यह थी कि शेरू के अपाहिज होने की घटना से मदन शेर को अवगत करा दिया गया था। एक होनहार शेरू को मदन शेर सहायता करना चाहते थे।

शेरू के मंच पर आते ही मदन शेर ने शेरू के गुणों से सभी को अवगत कराने के पश्चात एक घोषणा कि की हम अपनी ओर से शेरू के उपचार का सारा व्यय करेंगे और इस वर्ष के शाला उत्सव के लिए शेरू को शाला के सबसे होनहार छात्र का छात्र गौरव सम्मान देने की घोषणा की। यह तिथि शेरू के जन्मदिन के दिन निश्चित की गई। तालियों की गूँज के साथ पूरा समारोह उत्सवी वातावरण में परिवर्तित हो गया। आज शेरू को अपनी पढ़ाई एवं नृत्य का पुरस्कार मिल चुका था। उन्होंने बड़े ही शालीनता से मदन शेर एवं आचार्य के पैर छुए और नीचे आकर अपने माता–पिता के साथ फिर अपने स्थान में बैठ गया।

उत्साहवर्द्धन के लिए मदन शेर एवं आचार्य की खूब प्रशंसा हो रही थी। आज शेरू को विश्वास हो गया था कि वह ठीक हो जाएगा और वह फिर अपने शाला का बादशाह बन जाएगा। शेरू के माँ–पिताजी को आज शेरू के पढ़ने में प्रथम होने के साथ–साथ नृत्य का सबसे निपुण बालक होने पर गर्व हो रहा था।

आज शेरू के माँ–पिता जी को विश्वास हो गया था कि शेरू फिर वही नर्तक शेरू हो जाएगा। विद्यालय के उत्सव की समाप्ति पर शेरू पुन: मदन शेर एवं आचार्य का स्नेहाशीष लेने मंच पर पहुँचे और पैर छुए। इसके बाद अपने माता–पिता के सहयोग से अपने घर की ओर चल दिया।

शेरू के इन गुणों के कारण आज पूरे विद्यालय में सब जगह शेरू की चर्चा हो रही थी जबकि इस बार के शाला समारोह में उसने किसी भी कार्यक्रम में भाग भी नहीं लिया था। यह कहानी यह बतलाती है कि गुणों की पूजा सर्वत्र होती है।

– पटना (बिहार)

चित्र बनाकर रंग भरो

– चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राज.)

बस्ते में खजाना है

– डॉ. फहीम अहमद

सबको यह बताना है
बस्ते में खजाना है।

हैं ज्ञान भरी बातें
बस्ते की किताबों में।
है प्यार भरी खुशबू,
इन सारे गुलाबों में।।

खुशबू के खजाने को
हर ओर लुटाना है।

बस्ता है बहुत छोटा,
पर ख्वाब बड़े इसमें।
अनमोल उम्मीदों के,
नगीने हैं जड़े इसमें।।

हर एक नगीने का,
सम्मान बढ़ाना है।

बस्ते में समझदारी,
व सोच का समुन्दर।
इक रंग भरी जादुई,
दुनिया छिपी है सुन्दर।।

सबके लिए हमें ये,
संसार सजाना है।

– लखनऊ (उ. प्र.)

मेरा बस्ता

– डॉ. हरीश निगम

कितना सुन्दर कितना सस्ता,
ये मेरा शाला का बस्ता!
ढेर किताबें और कापियाँ
सुबह–शाम ढोता
सब कुछ अपने पेट में रखता
कभी नहीं रोता,
कड़ी धूप बरसातें झेले
कभी न इसकी हालत खस्ता!

हरा–गुलाबी बस्ता मेरा
लगे कमल का फूल
हम इतराते इसे झुलाते
ले जाते स्कूल
जिसने भी देखा है इसको
भूल गया है अपना रस्ता!

– सतना (म. प्र.)

भारी बस्ता

– बालस्वरूप राही, दिल्ली

मुझसे भारी
मेरा बस्ता,
कर दी मेरी
हालत खस्ता।
इसे उठाकर
बढ़ना मुश्किल,
सभी पुस्तकें
पढ़ना मुश्किल।।
कोई शिक्षक
को समझाए,
इसको कुछ
हलका करवाएँ।

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'बस्ता' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आओ विद्यालय चले

– डॉ. रंजना जायसवाल

देखते–देखते विद्यालय को बंद हुए दो वर्ष हो गए थे। जब से कोरोना आया माता–पिता ने बच्चों को शाला भेजना बंद कर दिया था। सरकार भी किसी प्रकार का खतरा मोल नहीं लेना चाहती थी। सच भी है जान है तो जहान है, शाला के गलियारे, कक्षाएँ, खेल के मैदान सब सुनसान पड़े थे। इतने दिनों में कोई झाँकने भी नहीं आया था, कभी–कभार प्रधानाचार्य और प्रधानाध्यापिका आते थे। उनके चेहरे पर एक अजीब सी उदासी और निराशा रहती थी। वह करते भी तो क्या... वर्षों से काम कर रहे ड्राईवर भैया, दाई जी के घरों के चूल्हे उनके कारण ही जल रहे थे पर मजबूरी भी उन्हें भी निकालना पड़ा।

'धप्प' तभी दूर से एक गेंद आकर कक्षा छः के दरवाजे से टकराई, यह आवाज सबसे पहले डस्टर ने सुनी। डस्टर जिसका काम था ब्लैक बोर्ड को साफ करना। ब्लैक बोर्ड और डस्टर में पहले अक्सर लड़ाई हो जाती थी।

''तेरे काले मुँह को साफ करने के चक्कर में मेरा मुँह भी गन्दा हो जाता है।'' तब ब्लैक बोर्ड गन्दा सा मुँह बनाकर कहता– ''मेरी क्या गलती है, यह चॉक है ना इसके चक्कर में मैं भी गन्दा होता हूँ और शिक्षकों के हाथ और कपड़े भी..।''

इस बात का कितना बुरा माना था चॉक ने।

''पहले की बात और थी अब तो मेरा भी नया प्रकार आ गया है, मैं कहाँ इतना गन्दा करती हूँ। यह सब बातें तो मेरे बाबा और पिताजी के जमाने की हैं।''

समय बदला और समय के साथ चीजे भी ब्लैक बोर्ड की जगह व्हाईट बोर्ड ने ले ली और चॉक की जगह पेन ने पर डस्टर आज भी मुँह पोंछ रहा था पर आज दूसरों का मुँह पोछने वाला स्वयं ही गन्दा पड़ा था। धूल की एक मोटी चादर उसके ऊपर भी पड़ी थी। डस्टर ने अपने सर को हिलाया और अपने माथे की धूल हटाने का प्रयास किया।

''कुर्सी दीदी! आपने कोई आवाज सुनी?''

कुर्सी दीदी का सभी बहुत सम्मान करते थे। आखिर उस पर शिक्षक बैठते थे, उस पर बैठकर न जाने उन्होंने कितनी ज्ञान की बातें बच्चों को सिखाई थी। ''आवाज तो हमने भी सुनी थी।''

बैंच, डेस्क, पर्दे, पंखे ने एक साथ बोला.....

''क्या विद्यालय खुल गए, बच्चे आ गए... फिर इतना सन्नाटा क्यों है। कितने दिन हो गए बच्चों की आवाज सुने हुए।''

तभी मेज पर पड़े लकड़ी के स्केल ने कहा।

मेज ने मुँह बनाया।

''क्या तुम भी बच्चों की प्रतीक्षा कर रही हो। तुम्हारे कारण से मेरी तो पीठ ही अकड़ जाती थी, जब देखो तब कोई न कोई शिक्षक मेरे पीठ पर तुमको बजाता ही रहता था। सोचो बच्चों की पीठ और हाथ का क्या हाल होता होगा।''

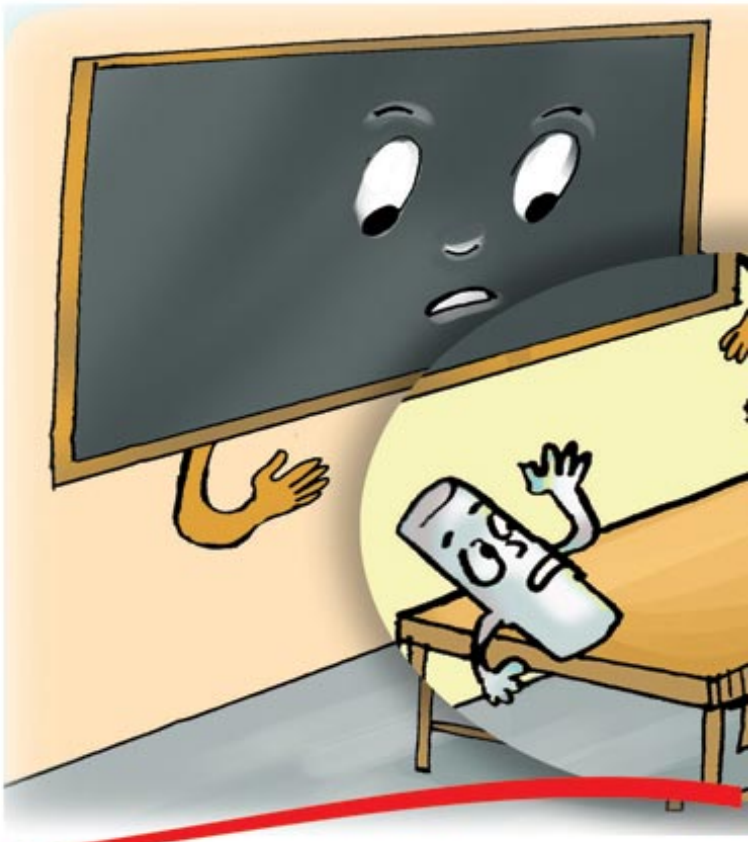

''मुझे भी कोई शौक नहीं है बच्चों को मारने का.. पर मेरी दादी कहती थी, बिना मार खाए विद्या नहीं आती। अब तो गनीमत है बच्चों को डांट कर ही छोड़ दिया जाता है पर मेरी नानी बताती थी उनके समय में सड़ाक-सड़ाक मारते थे। बच्चों की पीठ लाल हो जाती थी और बच्चे उफ्फ भी नहीं करते थे।''

पंखा बड़ी देर से सबकी बात सुन रहा था, वह थोड़ा ठंडे दिमाग वाला था, दिनभर चलते-चलते वह भी थक जाता था एक रविवार का ही दिन होता था जब उसे आराम मिलता था पर अब तो हर दिन रविवार की ही तरह हो गया था। मुँह पर जाले लग गए थे और चिड़ियों ने उसके ऊपर घोसलें बना लिए थे। दिनभर गन्दगी पहले मजाल थी कि धूल का एक कण भी उसके शरीर पर रहता। बच्चों की कमी तो उसे भी बहुत खल रही थी, बच्चों की खेल के कालखंड के बाद पागलों की तरह कक्षा कक्ष की तरफ भागते थे।

'वो अक्षय याद है आप सबको... कितना शरारती था, कितनी बेदर्दी से हवा तेज पाने के लिए मेरे कान उमेठ देता था। एक बार योग कक्षा के समय उसने हर्ष का जूता उछालकर मुझ पर चढ़ा दिया था, कितना गुस्सा आया था पर बच्चे अक्षय की इस हरकत को देख खिल-खिलाकर हँस पड़े थे। कहाँ गए वह दिन न वो बच्चों की खिल-खिलाहट थी और न ही उनकी मासूम शैतानियाँ-''

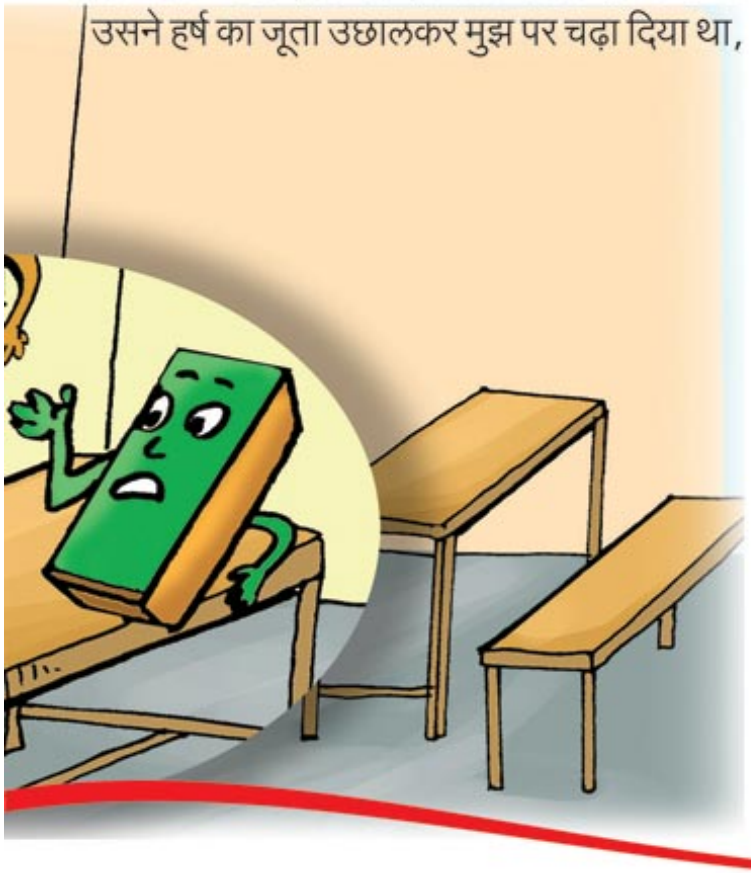

पंखा कहते-कहते उदास हो गया। एक दिन प्रधानाध्यापिका ने सितार, ढ़ोलक और तबला भी इसी कमरे में रख दिए थे।

''दीदी! आप से कभी मुलाकात तो नहीं हो पाती पर प्रार्थना के समय और वैकल्पिक कालखंड के समय आपकी सुमधुर आवाज सुनकर मन झूम जाता था।''

पंखे ने बड़ी गम्भीरता से कहा- सितार इन सब में सबसे बड़ा था, विद्यालय में वाद्ययंत्रों में वही सबसे पहले आया था, उसके चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए। ''आप सबसे मिलकर बहुत अच्छा लगा, सच कह रहे आप सब ये सन्नाटा ये वीरानी अब अच्छी नहीं लगती वो खिल-खिलाते चेहरे बहुत याद आते हैं। रोज की प्रार्थना हो या फिर वार्षिकोत्सव हमारे साथ के बिना कोई कार्यक्रम नहीं होता था पर आज देखिए।''

सितार ने गहरी साँस ली, बेंच और सीट दोनों जुड़वा बहनें थी, बच्चों की शरारतों से वह तंग आ जाती थी, पर आज वह भी बहुत दुखी थी।

''आप सबको निकुंज याद है जब देखो तब हमारी टांगें पकड़कर खींच देता था। ये कोई बात हुई भला वह रचना तो रोज ही अपनी सब्जी मेरे ऊपर गिरा देती थी और अमित पानी गिराए बिना तो उसका दिन पूरा नहीं होता था पर सच कहूँ जो भी हो बच्चों के बिना अच्छा नहीं लगता।''

कुर्सी दीदी ने आँखें बँद की और कहा- ''आप सभी लोग आँखें बँद करके भगवान से प्रार्थना कीजिए कि सब पहले की तरह हो जाए और शाला की चहल-पहल वापस आ जाए।''

- मिर्जापुर (उ. प्र.)

प्रसन्नता व दु:ख

– रजनीकांत शुक्ल

वे तीनों सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र थे। जो उत्तर प्रदेश राज्य के आजमगढ़ जिले में स्थित था। उन्होंने उस दिन मिलकर दत्तात्रेय धाम जाने की योजना बनाई थी। वह वर्ष २००१ के सितम्बर महीने की तीस तारीख था। उस दिन रविवार था। छुट्टी होने के कारण ही उन्होंने उस दिन यह योजना बनाई थी।

उनके क्षेत्र में दत्तात्रेय धाम की बड़ी मान्यता है। कुँवर और तमसा नदी के संगम पर बने आश्रम में कहते हैं अत्रि मुनि के पुत्र महर्षि दत्तात्रेय ने कभी घोर तपस्या की थी। जिसमें प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर तीन दिन का मेला लगता है। उसमें स्नान करके मंदिर में दर्शन करके लोग पुण्य के भागी बनते हैं।

उस दिन अनूप दीपक और चन्दन इन तीनों साथियों की जोड़ी तेजी से नदी की ओर बढ़ी चली जा रही थी। उनका मंतव्य आज उस छुट्टी के दिन का आनन्द लेना था। नदी के किनारे पर पहुँचकर उन्होंने अपने कपड़े किनारे पर रखे और एक–एक करके नदी के पानी में उतर गए।

नदियों में अधिकांश दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। वहाँ भी होती थीं। किन्तु फिर भी लोग मानते नहीं थे। बच्चे तो बच्चे ठहरे जरा सा बड़ों का ध्यान हटा और शरारत करने लगते हैं। बिना किसी सुरक्षा का कोई ध्यान रखे लापरवाही बरतने के कारण अधिकांश ऐसी दुर्घटनाएँ हो जातीं हैं।

ये तीन बच्चे भी मौज–मस्ती में नदी में नहाने तो चले आए किन्तु इन्होंने यह नहीं सोचा कि वे इतने कुशल तैराक नहीं हैं। यदि नहाने आ भी गए हैं तो किनारे पर रहें। लेकिन नहीं ऐसे में जरा–सी असावधानी भी जानलेना सिद्ध होती है।

वही इन लोगों के साथ भी हुआ वे नहाने के लिए नदी में उतरे। किन्तु खेल–खेल में उनमें से एक किनारे से जरा नदी के पानी में अन्दर की ओर गया। जहाँ नदी के जल के प्रवाह की तेजी ने उसके पाँव उखाड़ दिए। परिणाम यह हुआ कि वह पानी के साथ बहकर जाने लगा। संकट में फँसने पर वह बचाव के लिए चिल्लाया तो उसके बाकी दोनों साथी उसको बचाने के लिए आगे आए और वे भी धारा की तेजी के शिकार हो गए।

अब वे तीनों के तीनों पानी में बहकर जाने लगे। बचाव के लिए हाथ पाँव मारते हुए वे सहायता के लिए चिल्लाते जा रहे थे। नदी के किनारे पर उस समय कुछ लोग थे। किन्तु उनमें से कुछ को तैरना नहीं आता था। कुछ को अगर तैरना आता भी था तो उनके

अंदर साहस नहीं था कि वे उन्हें बचाने के लिए कूद पड़े।

जिन खड़े लोगों ने सहायता के लिए इन तीनों की यह पुकार सुनी उनमें पास के गाँव असनी का चन्दन पासवान भी था। वह अभी केवल तेरह वर्ष का ही था। घर गाँव के लोग उसे पिन्टू कहकर बुलाते थे। उसे तैरना आता था। उसने देखा कि किनारे पर और भी कई लोग खड़े थे। जिन्हें वह जानता था कि उन्हें तैरना आता है। किन्तु उनमें से कोई हिलने तक को भी तैयार नहीं था। चन्दन ने एक बार उनकी ओर देखा और फिर बहते जा रहे उन तीनों बच्चों की ओर उसने मन ही मन एक निर्णय लिया और तेजी से दौड़ते हुए आगे बढ़कर नदी में छलांग लगा दी।

नदी में उस समय काफी पानी था। किन्तु बिना उसकी चिंता किए चन्दन ने तेजी के साथ तैरते हुए उन तीनों तक पहुँचने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। वे बच्चे तो केवल पानी के बहाव में बह रहे जबकि पिन्टू ने बहाव से अधिक तेज गति से तैरकर उन तक जाने का प्रयत्न किया।

सबसे पहले उसके हाथ में जिसका हाथ आया वह चन्दन सिंह था जिसे पकड़कर वह सुरक्षित किनारे की ओर चल दिया। पानी के बहाव के विपरीत चन्दन सिंह को लेकर पिन्टू किनारे तक पहुँच गया। उसे पानी से बाहर छोड़कर वह शीघ्रता से दूसरे बच्चे को बचाने के लिए फिर से नदी में कूद पड़ा। जल्दी ही वह तैरता हुआ दूसरे बच्चे के पास तक जा पहुँचा। वह दो बच्चों को एक साथ नहीं ला सकता था। वे दोनों इस समय एक-दूसरे से दूर भी थे। उसे जल्दी थी दूसरे बच्चे को बचाने के बाद तीसरे बच्चे को बचाने के लिए उसे अभी फिर आना होगा।

इस बार उसने जिस बच्चे को पकड़ा वह दीपक सिंह था। उसने दीपक को पकड़कर किनारे लेकर आने के लिए जूझना आरंभ कर दिया। पानी का बहाव उसकी गति को धीमा कर रहा था। जबकि उसे जल्दी थी कि बाकी बचे तीसरे बच्चे अनूप को भी अभी उसे बचाकर लाना था।

लहरों से संघर्ष करते हुए चन्दन पासवान को दीपक सिंह को लेकर नदी के किनारे तक पहुँचने में थोड़ा समय लग गया। दीपक को सुरक्षित किनारे पर छोड़कर उसने अनूप को बचाने के लिए पलटकर देखा तो वह हैरान रह गया उसे वहाँ जल की लहरों के सिवाए कुछ नहीं दिखाई दिया।

अनूप उसको नदी के पानी में कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था। लगता है कि पानी की लहरें उसे अपने साथ बहा ले गईं। चन्दन ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु तब तक अनूप उसकी पहुँच से काफी दूर निकल चुका था। वह कितना भी दूर होता पर अगर वह दिखाई दिया होता तो चन्दन एक प्रयत्न उसे बचाने का अवश्य करता।

चन्दन को दो बच्चों को बचा पाने की प्रसन्नता तो थी किन्तु एक को न बचा पाने का दु:ख भी था। काश किनारे पर उपस्थित कुछ लोगों ने भी उसकी तरह साहस दिखाया होता तो अनूप भी बच सकता

था।

सभी लोगों ने तेरह वर्ष के चन्दन के इस साहसिक प्रयास की प्रशंसा की। न केवल वहाँ पर उपस्थित लोगों ने बल्कि गाँव के लोगों ने भी चन्दन की इस बहादुरी की सराहना की। समाचार-पत्रों ने इस समाचार को प्रकाशित किया और लोगों ने चन्दन के नाम को वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया।

चन्दन पासवान को वर्ष २००२ का **'संजय चोपड़ा'** राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के द्वारा प्रदान किया गया। उसने देश के अन्य चुने हुए बहादुर बच्चों के साथ गणतंत्र दिवस की परेड में हाथी की सवारी भी की। नन्हें मित्रो!

कोई दिखे कष्ट में तो हम खड़े नहीं रह पाएं।
हो सामर्थ्य भले ना पर हम दौड़े-दौड़े जाएं।।
अपने बल का पता न हमको पर सबकुछ कर जाएं।
अपने हाथों से हम अपनी, खुद तकदीर बनाएं।।

– नई दिल्ली

आपकी पाती

आदरणीय महोदय! सादर अभिवादन।

देवपुत्र के जून-जुलाई २०२१ अंक में 'हाथी का अण्डा' बाल कहानी का प्रकाशन सुखद अनुभूति करा गया। आपने कहानी को ऐसे तराशा, ऐसे संपादित कर प्रकाशित किया कि पढ़ते हुए भाव-विभोर हो गया, कहानी पढ़कर कुछ पल को आँखें भी नम हो गईं। जिस कहानी को लिखकर हम भूल गए, उसे आपके द्वारा संभालकर रखना और समय आने पर इतने सुंदर तरीके से प्रकाशित करना, प्रभावित कर गया। आपने एक बहुत पहले भेजी कहानी को नए रूप में प्रकाशित कर मुझमें भी एक नया विश्वास जगा दिया। किसी के परिश्रम को सार्थक करने का काम आप जैसा ही कोई अच्छा इंसान कर सकता है। मैं अंतर्मन की गहराइयों से आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

कोरोना के ऐसे संकटकाल में जबकि साहित्यिक गतिविधियाँ थमी हुई हैं, तब आपके द्वारा निरंतर बच्चों के हितार्थ साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन करते रहना, याद रखा जाएगा। आपके द्वारा केवल हिन्दी की ही सेवा नहीं की जा रही, बल्कि सार्थक कहानियों, कविता, लघुकथाओं, लेखों का चयन, प्रकाशन कर बच्चों को संस्कारित करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। मेरी रचनाओं को एक-एक कर स्थान देकर आपने मुझे जिस तरह से गौरवान्वित किया है उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। आपको सादर नमन... अभिनंदन...।

आपके कुशल मार्गदर्शन में जिस प्रकार से देवपुत्र के समृद्ध अंक निकाले जा रहे हैं उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। आपका यह प्रयास साहित्य की दुनिया में अविस्मरणीय रहेगा। मेरी ओर से आप व आपके सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ.. मंगलकामनाएँ... एक बार पुनः धन्यवाद, बहुत आभार।

– आशीष श्रीवास्तव, भोपाल (म. प्र.)

हाजमे की गोलियां

चित्रकथाः देवांशु वत्स

वह चोर मैं हूँ

– ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

''रंगबिरंगे गुब्बारे ले लो। रंगबिरंगे गुब्बारे।'' घर के बाहर से आवाज आई। राहुल घर में ही था। वह झट से पिताजी के कमरे में गया। वहाँ पिताजी नहीं थे। टेबल पर कुछ रुपए रखे थे। उसने पिताजी को आवाज दी– ''पिताजी! पिताजी!'' किन्तु, पिताजी वहाँ नहीं थे। इस कारण नहीं आए।

माँ पड़ोस में गई थी। गुब्बारे वाला जा रहा था। राहुल से रहा नहीं गया। उसने सोचा कि मैं दस रुपए ले लेता हूँ। जब पिताजी या माँ आ जाएगीं तब बता दूँगा। मैंने दस रुपए लिए है। यह सोचकर उसने एक दस का नोट उठा लिया। झटपट बाहर आ गया।

''भैयाजी! एक लाल रंग का गुब्बारा दे दो।'' कहते हुए राहुल ने दस का नोट दिया। एक गुब्बारा ले लिया। यह गुब्बारा गैस का था। वह आसमान में उड़ने का प्रयत्न कर रहा था। उसे लेकर राहुल दौड़ा। गुब्बारा उसके पीछे–पीछे दौड़ रहा था। इस प्रकार वह बहुत देर तक खेलता रहा।

समय का उसे ध्यान ही नहीं रहा। जब उसका मन भर गया तो घर की ओर चल दिया। अभी वह घर के बाहर ही पहुँचा था कि अंदर से तेज आवाज आने लगी।

वह रुक कर सुनने लगा।

पिताजी पूछ रहे थे– ''यहाँ से रुपए किसने लिए हैं?''

''मुझे क्या पता? आप कहीं दूसरी जगह रखकर भूल गए होंगे।'' माँ कह रही थी।

तभी पिताजी ने कहा– ''तुम मुझे भुलक्कड़ समझ रही हो! मुझे पूरी तरह ज्ञात है कि मैंने यही पूरे पैसे गिन कर रखे थे।'' पिताजी जोर–जोर से कह रहे थे। वह तो अच्छा हुआ कि मेरी जेब में दस रुपए और थे। वे निकाल कर मैंने गैस वाले को दे दिए। अन्यथा मेरी हँसी उड़ते देर नहीं लगती।''

''आपको क्या लगता है?'' माँ की आवाज आ रही थी। ''वे पैसे मैंने लिए हैं?''

''हाँ और क्या? लेकर भूल गई होगी। तुम्हें आजकल कुछ याद नहीं रहता है।''

''देखो जी, आप मुझ पर आरोप लगा रहे हैं। मैं पैसे लेकर क्या करूँगी?''

''किसी को देना होंगे। याद करो।'' पिताजी ने कहा– ''वैसे किसी से बिना पूछे पैसे उठाना चोरी होता है।'' उन्होंने तीखे स्वर के साथ कहा।

यह सुनकर राहुल घबरा गया। अपने घर में पैसे लेना चोरी हो सकता है। यह उसने कभी नहीं सोचा था। माँ को लगा कि उन्हें चोर कहा गया इसलिए उन्होंने कहा– ''अपने घर में से पैसे लेना चोरी नहीं होता है।''

''हाँ! माँ सही कह रही है।'' राहुल ने मन ही मन कहा।

''लेकिन किसी से बिना पूछे किसी की चीज को उठाना क्या कहलाता है?'' पिताजी ने जोर से कहा।

''चोरी!''

''ओर नहीं तो क्या?''

''चोरी और क्या?'' पिता जी ने कहा– ''फिर उसे छुपाना। यही होता है चोरी और सीना जोरी।''

यह सुनकर राहुल घबरा गया। उसने सोचा कि रुपए तो उसने लिए हैं। माँ के ऊपर चोरी का आरोप लग रहा है। जल्दी से चलकर अपनी चोरी स्वीकार कर लेना चाहिए। तभी उसे लगा कि पिता जी गुस्से में हैं। उसे जोर से डाँटेंगे। हो सकता है मार भी दें।

तब वह पछताया। उसे बिना पूछे पैसे नहीं लेना

चाहिए थे। गुब्बारा नहीं लेता तो क्या बिगड़ जाता? थोड़ी देर ही तो खेला है। आज नहीं तो कल खेल लेता।

उसके हाथ में लाल गुब्बारा था। वह उसे अच्छा नहीं लग रहा था। उसे लग रहा था कि वह गुब्बारा नहीं, अंगारा है। जो धागे पर लटके हुए उड़ रहा है। उसने मन ही मन सोचा कि गुब्बारे को फूट जाना चाहिए। न यह रहेगा न कोई टंटा या झगड़ा होगा। यानी ना रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

मगर, हम जैसा सोचते हैं वैसा कभी नहीं होता है। गुब्बारा आराम से आसमान में लहरा रहा था। तभी उसे कुछ याद आया। एक बार गुरु जी ने विद्यालय में कहा था– ''हमें चोरी नहीं करना चाहिए। यानी किसी दूसरे की चीजों को बिना उसके मालिक से पूछे नहीं उठाना चाहिए।''

तब राहुल ने गुरु जी से पूछा था– ''गुरु जी! यदि कोई गलती से कोई चीज उठा ले तब क्या करना चाहिए?''

''तब हमें तत्काल अपनी गलती मान लेना चाहिए। यानी जब हम चोरी करके उसे स्वीकार कर लेते हैं तो चोरी–चोरी नहीं रह जाती है, मालिक इस बात को अच्छी तरह से समझ जाता है। हमारा उद्देश्य चोरी करने का नहीं था।''

यह याद आते ही वह तेजी से कमरे में गया। जाते ही पिता जी से बोला– ''पिता जी! आपका चोर यह रहा। आप जो चाहे वह दण्ड दे सकते हैं। यह गलती मुझसे हुई है।'' वह एक ही साँस में तेजी से सब कुछ बोल गया।

यह सुनते ही माँ ने कहा– ''क्या कहा! पैसे तुमने उठाए थे?'' वे चकित थीं।

''हाँ माँ!'' उसने झट से कहा– ''घर में कोई नहीं था। मैं किससे पूछता?''

''और डाँट मुझे पड़ रही थी। तेरे पिता जी मुझे चोर ठहरा रहे थे।'' माँ ने पिता जी की ओर देखकर कहा। मानो कह रही हो कि मैं सही बोल रही थी। किन्तु, आप मेरी बात नहीं मान रहे थे।

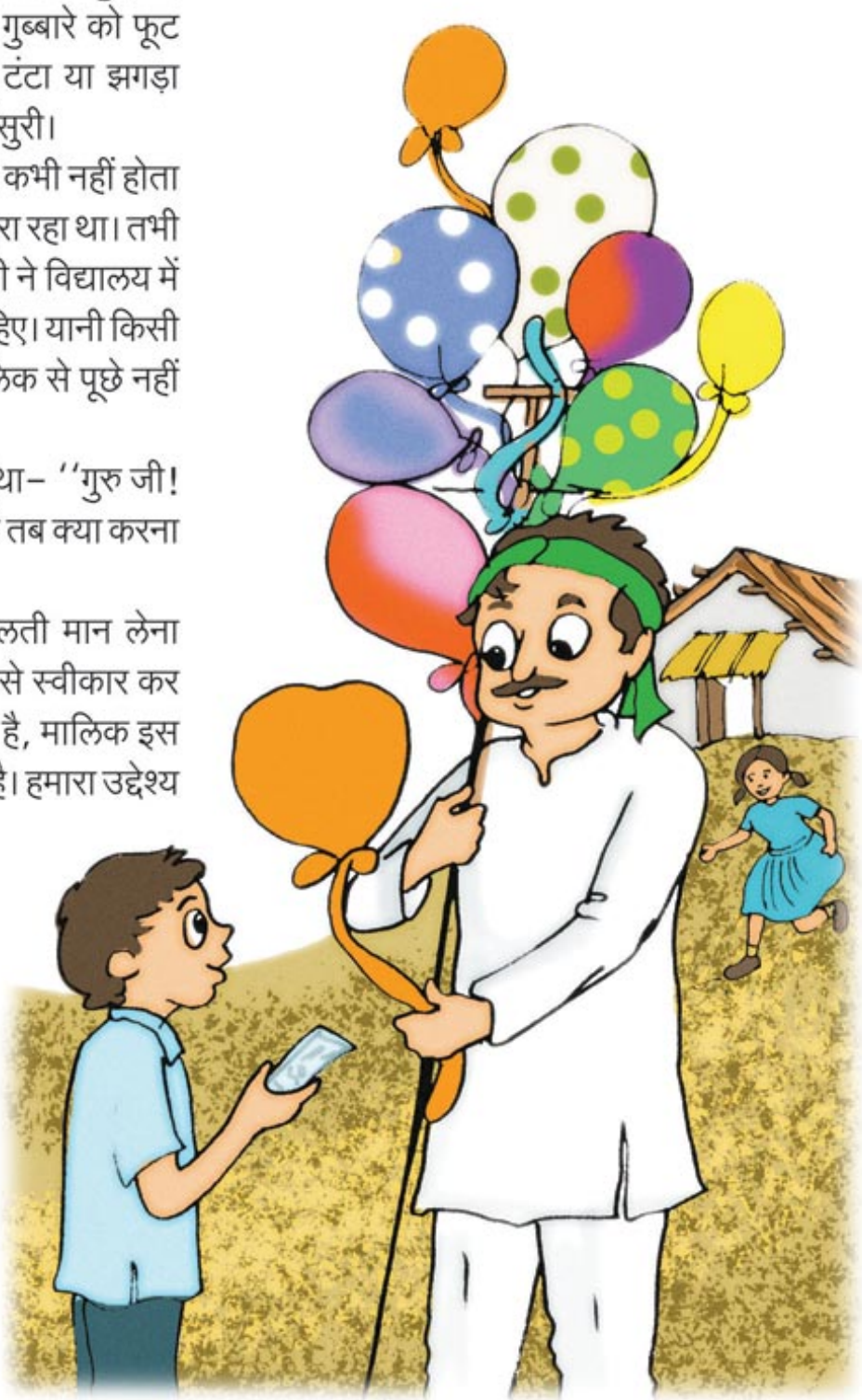

''जी माँ! गलती हो गई!'' राहुल ने कान पकड़ते हुए कहा– ''आप पड़ोस में गई थी। पिता जी यहाँ नहीं थे। तभी गुब्बारे वाला आ गया। उसके पास उड़ने वाले गुब्बारे थे। मुझे चाहिए थे। इसलिए मैंने इसमें से दस रुपए ले लिए थे।''

''अच्छा!'' माँ ने कहा और पिता जी की ओर देखकर बोली– ''अब बोलिए, चोर कौन है?'' कहने के साथ उन्होंने राहुल की ओर देखा। वैसे देखा जाए तो राहुल ने अपनी गलती स्वीकार करके अच्छा काम किया है। इससे इसे अपनी गलती अनुभव हो गई। हमें भी पता चल गया कि पैसे किसने उठाए थे।''

''क्षमा करें माँ! आगे से बिना पूछे पैसे नहीं लूँगा।'' राहुल बोला तो माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा– ''कोई बात नहीं बेटा! किन्तु ध्यान रखना, बिना पूछे कोई चीज नहीं लेना चाहिए। रुपए तो बिलकुल नहीं लेना चाहिए। यह चोरी कहलाता है।''

''ठीक है माँ!'' कहकर राहुल ने पिता जी की ओर देखा। फिर कहा– ''पिता जी! माँ को क्षमा कर दीजिएगा।''

इस पर पिता जी ने हँसकर कहा– ''अरे! तेरी माँ ने कौन सी गलती की है जो क्षमा कर दूँ। उन्होंने चोरी नहीं की थी। वे यही बात पूरे जोर से कह रही थी। सच बोलने में कौन सी गलती होती है।'' यह कहकर पिताजी ने अपनी गलती मान ली। वे बोले– ''वह तो मैं ही गलत था।'' कहकर वे चुप हो गए।

यह सुनकर माँ मुस्करा दी।

राहुल भी समझ गया था कि बिना पूछे कोई चीज नहीं लेना चाहिए।

– रतनगढ़ (म. प्र.)

११ जनवरी १९४८ स्व. श्री नवीन सागर जी का जन्मदिन है। सागर (म. प्र.) के श्री नवीन जी का १४ अप्रैल २००० को भोपाल में निधन हुआ। लेकिन बच्चों के रचनासंसार में अपनी रचनाओं से वे अमर रहेंगे। – सम्पादक

शिशु गीत

भोलू का सपना

– नवीन सागर

भोलू ने सपना देखा
सपने में सपना देखा।
आसमान पर बहुत बड़ा
देखा घर अपना देखा।

नीचे तभी दिखी धरती
भोलू कूद पड़ा नीचे।
गिरते ही सपना टूटा
पड़ा रहा आँखें मींचे।।

कहानी

भगवान बचाए इन चिरागों से...

– डॉ. शशि गोयल

बचपन में अलाउद्दीन के चिराग के विषय में पढ़ा था उससे जितना अधिक प्रभावित जब हुआ था उसका ही अब तक भी था। भगवान ने भाग्य मध्यम श्रेणी के गृहस्थों का दिया है पर मन करोड़पति जैसा दिया। हर समय आसमान की बुलंद ऊँचाईयों को छूने में लगा रहता, इन्हीं मन की बुलंदियों ने दिल में एक इच्छा पैदा की कि काश में भी लखपति करोड़पति होता तो सब दिल की इच्छाएँ निकाल लेता। पर पापी पेट भरे तो बाकी की खुराफातें सूझें नौकरी के लिए हाथ–पैर मारे पर बिना सिफारिश कहीं नौकरी नहीं मिली। कहीं खाली जगह देखी पहुँचे तो पाया भाई उस जगह तो फर्म का आदमी ही परमानेंट हो गया, राह तो परमानेंट करने लिए निकालनी ही पड़ती है। कहीं पर किसी मंत्री का भतीजा लग गया तो कहीं कमिश्नर का भांजा इन सब चक्करों में पास की गांठ और हलकी हो गई अब लखपति बनने के हमारे पास तीन ही उपाय थे।

पहला तो यह कि शायद कोई हमारा लखपति नाना, चाचा, मामा मर जाए और वसीयत में सब हमारे नाम कर जाए, एकाएक फिल्मों की तरह वकील फाइल लेकर पहुँच जाए कि आपके फलाँ–फलाँ रिश्तेदार मरने से पहले हमें सब कुछ दे गए पर ऐसी कहाँ कोई आशा नहीं थी क्योंकि हमारी सात पीढ़ियों में कोई लखपति था ही नहीं।

दूसरा उपाय तथा कोई लॉटरी खुल जाए हमारे नाम तो हम रातोंरात लखपति बन जाएँ इसके लिए प्रयत्न भी की बहुत सी जमा पूँजी इसके चक्कर में फूँक दी पर लाख दो लाख तो दर किनार कभी सौ पचास भी भूले भटके नहीं मिले।

तीसरा उपाय था कहीं से अलाउद्दीन का चिराग हाथ लग जाना। अब इसके लिए हमने भगवान से प्रार्थना शुरू की ऊपर वाले तू अपना हाथ हमारे ऊपर भी फेर दे, हमारे घर का छप्पर फाड़ दे बस इतना ही फाड़ना कि हम उसे ठीक करा सकें, बड़ा लैम्प न सही छोटा मिट्टी का दीया दे दे जिसमें जिन्न न हो जिन्न का बच्चा ही बैठा हो। हाँ इधर हमने अपने घर के छप्पर की मजबूती को टटोलते हुए छत पर टॉर्च की रोशनी फेंकी उधर कमरे में जोर का धमाका हुआ और साथ ही आवाज आई– ''मेरे मालिक बंदे को कैसे याद किया?'' हमारी डर के मारे घिग्गी बंध गई। धीरे–धीरे संभले तो देखा जिस टॉर्च को हमने जलाया था वह जिन्न उसी में से निकला है।

जिन्नों ने भी तरक्की कर ली थी दो दिन पहले कबाड़ी के घर से कुर्सी लाए थे वहीं टॉर्च दिखी तो ले आए अपनी कारस्तानी दिखाई ठीक करके सैल डलवा लिए थे अब बिजली का तो भरोसा है नहीं मालुम पड़े एक कदम ठीक उठाया। दूसरे में छपाक से

नाले में जा गिरे।

जिन्न को देख हम खुशी से पागल हो गए। खुशी में उससे जा लिपटे उसे उठाने लगे। लेकिन कहाँ वह स्वर्ग के माल खाने वाला कहाँ हम वनस्पति के दो छटंकी के शरीर वाले झेंप मिटाकर उसके हाथ को ही जोर-जोर से हिलाकर बोले- ''वाह साहब अब तो हम तुम्हारे कारण दुनिया के सबसे नामी-गिरामी आदमी हो जाएँगे। वाह! क्या खूब आए हो।''

दिमाग धीरे-धीरे ठिकाने आया तो उससे बोले- ''भाई! इस समय तो जाओ हम जरा सोच-विचार कर लें कि हमें क्या काम कराना है।''

''क्या कहा मेरे मालिक! बिना कोई काम किए नहीं मैं ऐसे तो नहीं जाऊँगा। यदि कोई काम नहीं था तो बुलाया क्यों था? और सुन लीजिए मालिक आप आगे से ऐसे खाली-पीली मुझे नहीं बुलाना, नहीं तो हमेशा के लिए गायब हो जाऊँगा, हमारा भी बॉस है उसके सामने हिसाब देना होता है कि हमने जाकर क्या काम किया? यह सरकारी कार्यालय नहीं है कि यहाँ कोई काम बिना किए वेतन मिलेगा।'' वह हमें गुस्से से घूरने लगा।

हम अपनी गर्दन संभालने लगे कि कहीं यह टीप न दे और हमारी अम्मा बिचारी तड़पकर रह जाए। जैसे ही अम्मा का विचार आया तभी हमने कहा- ''जाओ इस मकान की जगह एक शानदार महल बना दो। बिचारी बहुत दिनों से कह रही है कि छत टपक रही है मकान मालिक तो बनवा नहीं रहा है जरा-सा पलस्तर तू ही करा दे।''

यह आदेश दे हम अपने कार्यालय के लिए प्रस्थान कर गए। अभी हमने फाईल खोलनी ही शुरू की थी कि हमारे नाम फोन आया, कोई पड़ोसी बोल रहा था, माँ ने तुरन्त बुलाया था। जाकर देखा तो धड़धड़ा आसपास के तीन चार मकान गिर रहे थे और उनकी जगह नवीन निर्माण हो रहा था बनाने वाले दिख नहीं रहे थे। सबकी घिग्गी बंधी हुई थी, जान सूख रही थी तीन चार ओझा और भूतप्रेत भगाने वाले खड़े हुए थे। ये इसे किसी भूत का प्रकोप मान रहे थे, पर मुझे तो असलियत ज्ञात थी, मैं दौड़कर अपने मकान में गया और टॉर्च उठाई जिन्न बुलाया और कहा- ''यह क्या कर रहे हो, मेरी मुसीबत बुलाओगे क्या, इन सबको वैसा का वैसा कर दो और बस मेरे मकान को ही ठीक कर दो।''

''पर मालिक! इतनी जरा-सी जगह को आलीशान महल बना दूँ।'' आश्चर्य से कहा-''नहीं मालिक! नहीं, यह तो मेरे नक्शे की एक कोठरी मात्र है।''

''बड़ा आया इंजीनियर कहीं का।'' बड़बड़ाते हुए उससे कहा- ''यह सब कुछ मैं नहीं जानता तुम इसे ही ठीक कर दो और जाओ।'' यह कहकर मैंने टॉर्च बंद की। माँ से कहा- ''कुछ भी नहीं है ठीक हो जाएगा शायद भूकम्प है और चुपचाप भीड़ में शामिल हो कुछ देर तमाशा देखा फिर खिसक लिया। इधर-उधर घूमकर तीन घंटे बाद वापस आया तो देखता हूँ सारे पड़ोसी एकत्रित हैं माँ बेहोश पड़ी है।

मकान बिलकुल बदल गया था जैसे छोटा-सा राजमहल हो। डॉक्टर भी बैठा था साथ ही अखबार वाले, फोटोग्राफर और सबके ऊपर मकान मालिक सब उपस्थित थे। डॉक्टर कह रहा था सदमा बैठ गया है स्थिति पहले जैसी नहीं हुई तो पागल हो सकती हैं। बड़ी कठिनाई से भीड़ खिसकाई। माँ को जैसे-तैसे होश आया उन्हें कुछ समझ पाता कि स्वयं के बेहोश होने के आसार नजर आने लगे। मकान मालिक ने, नगर निगम, आवास विकास, भ्रष्टाचार निरोधक, आयकर अधिकारी आदि के साथ प्रवेश किया।

सर्वप्रथम मकान मालिक ने कहा कि- ''बिना उनकी आज्ञा के मकान में परिवर्तन क्यों करवाया?'' आवास विकास वाले बोले- ''क्या आपको ज्ञात नहीं है कि बिना आज्ञा नक्शा पास कराए आप कुछ भी नहीं बना सकते?'' संपत्तिकर

वाले बोले– ''अब दिखाइए क्या–क्या बनवाया है, कितना पैसा लगाया है?''

भ्रष्टाचार वाले बोले कि– ''यह पैसा आया कहाँ से?'' और आयकर वाले बोले कि– ''कोई और काम बेनामी चल रहा है क्या?''

मेरी अक्ल साफ हो गई कुछ उत्तर देने से पहले विचार कर लेना चाहिए था, इस समय मेरा एक–एक शब्द कीमती था। मुझे चुप देखकर पाँचों बोले– ''कहिए साहब चुप कैसे हैं?'' इधर ये भूत उधर माँ के सिर पर चढ़ा भय का भूत। क्या करूँ? एकाएक विचार आया कि क्यों न बेवकूफ बनाकर काम निकाला जाए, इसलिए कहा– ''महोदय! मैं हैरान हूँ कि आप लोग कह क्या रहे हैं मुझे तो कोई नवीनता नहीं नजर आ रही है, मैं तो इन मालिक महोदय के टूटे–फूटे मकान में बैठा हूँ पता नहीं सबको क्या हो गया है। छत की हालत आपको दिखाई नहीं दे रही है ये जगह–जगह से टूटा फर्श, अब क्या कहूँ? मुझे तो लगता है आप लोगों पर संदेह हो रहा है कहीं आप लोग पागलखाने से तो नहीं आए हैं और बन रहे हैं अधिकारी? अब तक मैं परेशान था अब वे आँखें फाड़–फाड़कर मुझे देख रहे थे शायद वो सब मुझे पागल समझ रहे थे। फिर मकान मालिक गुर्राकर बोला– ''हमें मूर्ख बनाने का प्रयास मत करो चुपचाप इस हवेली से उठकर नौ लाख की हवेली में चलो।''

मैंने हँसते हुए कहा– ''मेरी समझ में नहीं आता आप लोगों को क्या हो गया है लगता है इस स्थान पर भूत–प्रेतों का साया आ ही गया है तब ही ये नए–नए तमाशे हो रहे हैं।''

''अच्छा तो अब अपने काले धन को भूत धन ठहराना चाह रहे हैं।'' व्यंग्य से भ्रष्टाचार निरोधक बोले।

दूसरे महोदय भभक कर बोले– ''एक तुम्हारा ही दिमाग सही है और हम सब पागल हैं अगर यह झाड़ नहीं झाड़ू लटक रही है, बड़े–बड़े दीवार के बराबर आईने लगे हैं तो हम तुम्हारी आँखों में देख रहे हैं क्यों? बड़ी–बड़ी ऑइल पेन्टिंग सब हमारा भ्रम है। एक साथ हम सबका?''

''साहब! छत पर झाड़ नहीं जाले लटक रहे हैं, दीवार पर पेन्टिंग नहीं पहले किरायेदार के बच्चों द्वारा बनायी गई आड़ी–तिरछी लाईनें हैं। अब आप समझ सकते हैं उन मकान मालिक महोदय ने सात वर्ष से सफेदी नहीं कराई है और पता नहीं पहले से कब की हो रही है।'' मैंने दीवारों को घूरते हुए ध्यान दिया वास्तव में पेन्टिंग तो कमाल की हैं पता नहीं कहाँ–कहाँ से उड़ाई होगी जिन्न ने, कहीं एक लफड़ा और न खड़ा हो जाए।

उन सबको बाहर से घर दिखाने के लिए लेकर गए मकान मालिक की अनुपस्थिति का लाभ उठाया और तुरंत जिन्न से पहले जैसा घर करने के लिए कहा। पलभर में फिर दीवार चूना झड़ती दिखाई देने लगी। लौटकर वापस अंदर आए तो कुछ देर हकबकाए से देखते रहे फिर चुपचाप वापस चले गए। चलो न सही महल में रहना अब हाथ आए इस खजाने का उपयोग कैसे करें?

नकद नारायण वह ला नहीं सकता था। सोना लाने पर स्मगलर ठहर जाते, एक बार नकद लाने की कही तो न जाने कहाँ की मुद्रा उठा लाया फिर सोचा चलो दुनियाँ की सैर की जाए और उसके लिए जिन्न महोदय ने एक कालीन ला दिया अब कालीन पर हम बैठे और अपने को गिरने से बचाए कि दुनिया देखें। कार मंगाई तो वह पुराने जमाने का रथ उठा लाया जो महज अजायब घर की चीज थी बिना लाईसेंस तो वह भी हमारे लिए बेकार था पुरातत्व वाले धर लेते।

अब एक साईकिल मंगाकर उस पर चल रहे हैं। मन ही मन डर रहे हैं किसी की उठा तो नहीं लाया है चोरी के अपराध में धरे जाएँ।

– आगरा (उ. प्र.)

काली–गोरी मिनमिन

– सुमन बाजपेयी

एक थी म्याऊँ बिल्ली। नाम था मिनमिन। काले रंग की मिनमिन के घने–काले बाल और बड़ी–बड़ी आँखें थीं। उसके रोएँ भी बहुत मुलायम थे। पर थी वह बहुत चालाक। एक बात लेकिन उसमें अच्छी थी कि बेशक वह बहुत चालाक थी पर सहायता करने को हमेशा तैयार रहती थी। कोई भी उससे जाकर सहायता माँग सकता था और वह जो कर सकती थी, वह अवश्य करती। अगर कुछ करने में असमर्थ हो तो भी उनकी बात सुन उन्हें समझाने या परामर्श देने का प्रयास करती। किसी की बात सुन लेना भी क्या किसी बड़ी सहायता से कम होता है, ऐसा सब कहते थे। यही कारण था कि वह सबकी मिनमिन दीदी बन गई थी।

मिनमिन जब अन्य सफेद या भूरे रंग की बिल्लियों को देखती तो उदास हो जाती। वह भी चाहती थी कि उसका रंग गोरा हो जाए। सफेद व भूरे रंग की उसकी बिल्ली सहेलियाँ कितनी सुंदर दिखती हैं, वह अक्सर सोचती।

जब भी किसी बिल्ली पर संकट आता या उन्हें अपने भोजन के लिए चूहे पकड़ने होते तो वे मिनमिन दीदी के पास ही जातीं। मिनमिन से चूहे बहुत परेशान रहते थे। वह किसी न किसी तरह उन्हें अपने जाल में फँसा ही लेती थी। एक दिन सारे चूहे चिंकी सरपंच के बिल में इकट्ठे हुए और मिनमिन को पकड़ने की योजना बनाने लगे।

टिनटिन चूहा बोला– ''मिनमिन दीदी के कारण से मैं बाहर जाकर खेल भी नहीं सकता। मुझे हर समय बिल में ही रहना पड़ता है।''

पिंकी चुहिया उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए रुआँसा चेहरा बनाते हुए बोली– ''कल तो मैं बड़ी मुश्किल से मिनमिन दीदी की पकड़ से बची पर ऐसा कब तक चलेगा। एक न एक दिन तो वह मुझे दबोच ही लेगी।''

कुछ सोचते हुए अपनी मूँछों को ऐंठते हुए सरपंच चूहा चिंकी बोला– ''कुछ न कुछ तो करना ही होगा। मिनमिन दीदी को सबक सिखाना आवश्यक है, वरना इस बार भी हम गणतंत्र दिवस जोर–शोर से नहीं मना पाएँगे। बिलों में बैठकर, बिना मिलजुल कर पार्टी किए नए वर्ष का स्वागत करने में कहाँ मजा आता है। और मिनमिन कितनी शान से कॉलोनी के बागीचे में सब मित्रों के साथ पार्टी करती है।''

टीटू चूहे ने तब तक योजना बताई जिसे सुन सबके चेहरे खिल उठे। वे जानते थे कि मिनमिन अपने काले रंग के कारण बहुत दुखी रहती है। भोलू चूहा बहुत तेज भागता था और कहीं भी आसानी से घुस जाता था। उसने पहली मंजिल पर रहने वाली

काकी जिनके घर में वह छककर स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लिया करता था, को अधिकांश अपने चेहरे पर सफेद पाउडर लगाते देखा था। उसे लगाने के बाद उनका चेहरा सफेद दिखने लगता था, बिलकुल गोरी बिल्लियों की तरह। वह चुपके से उसी पाउडर के डिब्बे को उठा लाया।

चिंकी चुहिया का डेरा सबसे ऊपर की मंजिल में रहने वाली मोटी मौसी के घर में था। उनके घर में खूब मिर्ची वाला भोजन बनता था। प्रतिदिन खाते-खाते वह जान गई थी कि कोई लाल सी चीज होती है, जो खाने में डाली जाए तो मुँह से सी-सी निकलने लगती है और आँखों से आँसू तक निकल आते हैं। वह उसकी प्लॉस्टिक की शीशी उठा लाई। चूहों ने उसके अंदर खूब सारा वह लाल रंग का पाउडर मिला दिया। उस डिब्बे को उन्होंने वहाँ रख दिया जहाँ मिनमिन अधिकांश बैठा करती थी।

मिनमिन पाउडर के डिब्बे को देख प्रसन्न हो गई। ''वाह! यह सफेद सी चीज अगर मैं चेहरे पर लगा लूँ तो अवश्य गोरी हो जाऊँगी। वैसे भी आज मुझे शादी में जाना है। मैं ही वहाँ सबसे सुंदर लगूंगी। और नए वर्ष पर अपनी नई पोशाक में भी मैं ही सबसे प्यारी लगूंगी। सारी गोरी बिल्लियों के बीच अब मैं बुरी नहीं लगूंगी।''

उस डिब्बे को जैसे ही मिनमिन ने खोला तो उसे जोर से छींक आ गई। डिब्बा उलटकर उसके शरीर पर आ गिरा। वह गोरी तो लगने लगी, पर उसके शरीर में जलन होने लगी।

वह जोर-जोर से म्याऊँ-म्याऊँ कर सहायता के लिए अपनी सहेलियों को बुलाने लगी। पर उस समय वहाँ कोई नहीं था। सब शादी में जाने के लिए निकल चुके थे।

भोलू चूहा बिल से बाहर निकलकर बोला- ''मिनमिन दीदी! बहुत तंग किया है तुमने हमें। आज उसका मजा लो।''

''मेरी सहायता करो, चूहे भाई! मुझे पानी ला दो। तुम्हारा बहुत उपकार होगा। मैं वादा करती हूँ कि तुम्हें नहीं खाऊँगी।'' मिनमिन काँपती आवाज में बोली।

''मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता, पर तुम्हारे ठीक सामने पानी का नल है। वहाँ जाकर अपने शरीर को साफ कर सकती हो।''

पाउडर तो निकल गया पर रगड़ कर उसे निकालने के चक्कर में जगह-जगह से छिल जाने के कारण उसके शरीर पर धब्बे पड़ गए।

उसके बाद मिनमिन ने वहाँ के चूहों से मित्रता कर ली। मजे की बात तो यह हुई कि उसकी सलाह पर चूहों को साथ उसने गणतंत्र दिवस मनाया। अपनी नई पोशाक में वह बहुत सुंदर लग रही थी। वह समझ गई कि काले रंग वाले भी सुंदर लगते हैं।

- रोहिणी दिल्ली

दिल में
हिंदुस्तान
देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ
SURYA
MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES
आत्मनिर्भर भारत की पहचान
SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | Toll Free No.: 1800 102 5657

छोटी कहानी

चश्मे वाली बिल्ली

– बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

नीलू बिल्ली बहुत बूढ़ी हो गई थी। अपनी आँख से उसे कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। उसका चूहों का शिकार करना पुरी तरह बंद हो गया था। वह किसी तरह रूखी–सूखी खाकर अपना पेट भर रही थी। एक दिन नीलू बिल्ली घर से निकलकर शिकार की खोज में कहीं जा रही थी, तभी रास्ते में वह एक गहरे गड्ढे में जा गिरी। गड्ढे में गिरते ही नीलू बिल्ली जोर–जोर से रोने लगी। संयोग से गड्ढे के आस–पास चूहों की बस्ती थी। चूहों ने जब नीलू बिल्ली की रोने की आवाज सुनी तो बहुत सारे चूहे–चुहिया नीलू को देखने के लिए गड्ढे के पास आकर जमा हो गए।

गड्ढे में गिरी नीलू बिल्ली को देखकर सारे चूहे ताली पीट–पीटकर हँसने लगे। तभी नीलू बिल्ली हाथ जोड़कर सारे चूहों से बोली– ''मेरे चूहे भाइयो! मुझे इस गड्ढे से बाहर निकाल दो तुम सबका हम पर बड़ा उपकार होगा।''

तभी चूहों का सरपंच ओम चूहा बोला– ''नीलू बहन! तुमने बहुत सालों तक हम चूहों को बहुत सताया और हमें मारकर खाया अब तुम इसी गड्ढे में पड़ी रहो ताकी तुम्हारें पापों का दण्ड तो मिल जाए।'' ओम चूहे की बात सुनकर नीलू बिल्ली बोली– ''ओम भाई! मुझे अपनी आँखों से कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। मैं कुछ दिनों की और मेहमान हूँ, इसलिए मुझे बचा तो और जल्दी से इस गड्ढे से बाहर निकाल दो। मैं शपथ लेती हूँ किसी चूहे को हाथ तक नहीं लगाऊँगी।''

ओम चूहे को नीलू बिल्ली पर दया आ गई। उसने तुरन्त एक बाल्टी में रस्सी बाँध कर गड्ढे में डालकर बोला– ''नीलू बहन! तुम इस बाल्टी में बैठ जाओ ताकि हम तुम्हें बाहर निकाल सकें।'' ओम के

कहने पर नीलू बिल्ली बाल्टी में बैठ गई फिर चूहे मिलकर रस्सी सहित बाल्टी को ऊपर खींच लाए। नीलू बिल्ली को बाल्टी से बाहर निकाल कर ओम चूहा बोला– '' नीलू बहन! बताओ तुम कहाँ जाना चाहती हो?''

''मैं अपने भोजन की खोज में निकली थी पर मैं अब कहीं नहीं जाऊँगी। मैं डॉ. बिट्टू बंदर के पास जाना चाहती हूँ ताकि मैं अपने लिए एक चश्मा बनवा सकूँ।''

नीलू बिल्ली को पहले सभी चूहों ने अच्छे–अच्छे पकवान खिलाए फिर डॉ. बिट्टू बंदर के चिकित्सालय ले जाकर उसे एक चश्मा दिलवा दिया। आँखों पर चश्मा लगाते ही नीलू बिल्ली को सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगा। चश्मा पाकर नीलू बिल्ली प्रसन्नता से फूली न समाई।

उस दिन से नीलू बिल्ली चश्मे वाली बिल्ली के नाम से पुकारी जाने लगी।

– गोरखपुर (उ. प्र.)

पुस्तक परिचय

बातों ही बातों में

मूल्य १००/-
प्रकाशक-बोधि प्रकाशन-सी-४६,
सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया
एक्सटेंशन नाला रोड, २२ गोदाम,
जयपुर-३०२००६ (राजस्थान)

पद्मा चौगांवकर बाल साहित्य जगत का सुपरिचित नाम हैं पाँच दशकों से अधिक का सतत लेखन आज भी निरंतर है। प्रस्तुत पुस्तक आपकी नवीनतम २१ बाल कविताओं का संकलन है जिसमें बदलते सामाजिक परिवेश और बच्चों के मनोवैज्ञानिक बदलाओं को उकेरा गया है। अपने समान, प्रकृति व परिवेश पर महत्वपूर्ण समाधान प्रस्तुत करती ये कविताएँ सुन्दर रेखाचित्रों से अलंकृत श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।

हो गया उजाला

मूल्य १००/-
प्रकाशक-वनिका पब्लिकेशन्स
एन ए १६८ गली नं. ६,
विष्णु गार्डन नई दिल्ली-११००१८

डॉ. फकीरचन्द शुक्ला बाल साहित्य के वयोवृद्ध रचनाकारों में से एक सुप्रतिष्ठित हस्ताक्षर है। आपके लेखन में भाव, संस्कार एवं संवेदनाओं के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रमुखता से प्रकट होता है। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी ६ महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं जो किशोर वय के बच्चों के मनोविज्ञान एवं चिंतन को लक्ष्य करके लिखी गई हैं।

मेरी प्रिय बाल कविताएँ

मूल्य ४९५/-
प्रकाशक-लवकुश सिंह
सेहबरपुर रतनपुरा
जिला मऊ-२२१७०६ (उ. प्र.)

डॉ. राकेशचक्र बाल साहित्य की विविध विधाओं के सिद्ध रचनाकार हैं। आपकी लेखनी से निरंतर बाल साहित्य सृजन चलता रहता है। प्रस्तुत पुस्तक में मौसम, पशु-पक्षी, जीव-जंतु, पौधों एवं मनोरंजन के साथ-साथ प्रभातियों की १२० से अधिक कविताएँ संकलित हैं। एक छोटा खजाना है यह बाल कविताओं का।

दो बहादुर लड़के

मूल्य २००/-
प्रकाशक-अपोलो प्रकाशन
२५, सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के पीछे,
न्यू पिंक सिटी मार्केट, राजापार्क
जयपुर-(राजस्थान)

श्री हेमंत यादव 'शशि' बिहार की भूमि से बाल साहित्य जगत का एक जाना माना नाम है। आपने बच्चों के लिए प्रचुर लेखन किया है। प्रस्तुत बाल कथा संग्रह आपकी १६ मनोरंजन व ज्ञान से परिपूर्ण रोचक कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ जो प्रेरक हैं, जो जीवन के प्रति सकारात्मकता का भाव जगाती हैं।

कविता

पट्टू तोते की आजादी

– लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

मंटू इक दिन बाबा के संग,
घूमने चमन बाजार गया।
एक जगह बिक रहा तोता,
बाबा से कह, खरीद लिया।।

पिंजरे में बंद था, वह तोता,
बहुत ही प्यारा लगता था।
हरी मिर्च वो प्रेम से खाता,
सुंदर वह खूब दिखता था।।

मंटू और उसकी बहन चिंकी,
तोते को पट्टू कह कर बुलाएँ।
पट्टू के साथ वो दोनों खेलते,
उसे टमाटर व केला खिलाएँ।।

मंटू चिंकी के दादा व दादी,
गाँव से शहर मिलने आए।
दादा व दादी दोनों के लिए,
बहुत सुंदर खिलौने लाएँ।।

मंटू और चिंकी पट्टू को लाए,
दादा–दादी को तोता दिखाए।
दुहराता पट्टू, बोली को सुन,
प्रसन्न होकर, ये बात बताए।।

तोते को पिंजड़े में बंद देख,
दादा प्यार ने उन्हें बुलाया।
कैद में रखना, है नहीं उचित,
ये बात दोनों को समझाया।।

उनको होने लगा पछतावा,
मंटू व चिंकी निर्णय किए।
पिंजड़े से पट्टू को उड़ा कर,
मंटू व चिंकी बहुत खुश हुए।।

– फैतहा, बस्ती (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/११/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/११/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब **Jio Net** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना